दादा भगवान प्ररूपित

सर्व दु:खों से मुक्ति



दादा भगवान प्ररूपित

सर्व दुःखों से मुक्ति

संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन

प्रकाशक : **अजीत सी. पटेल**
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन,
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाली सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद - 380009, Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2100, +91 9328661166/77

प्रथम संस्करण : 3000 प्रतियाँ मार्च 2003
रीप्रिन्ट : 23500 प्रतियाँ अगस्त 2005 से सितम्बर 2019
नई रीप्रिन्ट : 1500 प्रतियाँ अक्तूबर 2024

भाव मूल्य : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : 40 रुपए

मुद्रक : अंबा मल्टीप्रिन्ट
एच.बी.कापडिया न्यू हाइस्कूल के सामने,
छत्राल-प्रतापपुरा रोड, छत्राल,
ता. कलोल, जि. गांधीनगर-382729, गुजरात
फोन : +91 79 3500 2142

ISBN/eISBN : 978-93-86289-69-8

Printed in India

त्रिमंत्र







नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद



'दादा भगवान' कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो 'ए.एम.पटेल' हैं। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

निवेदन

आप्तवाणी मुख्य ग्रंथ है, जो दादा भगवान की श्रीमुख वाणी से, ओरिजिनल वाणी से बना है, वो ही ग्रंथ के छः विभाजन किए गए हैं, ताकि वाचक को पढ़ने में सुविधा हो।

1. ज्ञानी पुरुष की पहचान
2. जगत् कर्ता कौन?
3. कर्म का सिद्धांत
4. अंतःकरण का स्वरूप
5. सर्व दुःखों से मुक्ति
6. आत्मबोध

परम पूज्य दादाश्री हिन्दी में बहुत कम बोलते थे, कभी हिन्दी भाषी लोग आ जाते थे, जो गुजराती नहीं समझ पाते थे, उनके लिए परम पूज्य दादाश्री हिन्दी बोल लेते थे, वो वाणी जो केसेटों में से ट्रान्स्क्राईब करके यह आप्तवाणी ग्रंथ बना है! वो ही आप्तवाणी ग्रंथ को फिर से संकलित करके यह छः छोटे ग्रंथ बनाए हैं! उनकी हिन्दी 'प्योर' हिन्दी नहीं है, फिर भी सुनने वाले को उनका अंतर-आशय 'एक्ज़ेक्ट' समझ में आ जाता है। उनकी वाणी हृदयस्पर्शी, हृदयभेदी होने के कारण जैसी निकली, वैसी ही संकलित करके प्रस्तुत की गई है ताकि सुज्ञ वाचक को उनके 'डिरेक्ट' शब्द पहुँचे। उनकी हिन्दी यानी गुजराती, अंग्रेजी और हिन्दी का मिश्रण। फिर भी सुनने में, पढ़ने में बहुत मीठी लगती है, नेचुरल लगती है, जीवंत लगती है। जो शब्द हैं, वे भाषाकीय द्रष्टि से सीधे-सादे हैं किन्तु 'ज्ञानी पुरुष' का दर्शन निरावरण है, अतः उनका प्रत्येक वचन आशयपूर्ण, मार्मिक, मौलिक और सामने वाले के व्यू पोइन्ट को एक्ज़ेक्ट समझकर होने के कारण वह श्रोता के दर्शन को सुस्पष्ट खोल देता है और उसे ऊँचाई पर ले जाता है।

– **डॉ. नीरू बहन अमीन**

संपादकीय

सांसारिक दु:ख किसे नहीं है? हर कोई उससे छूटना चाहता है। लेकिन वह छूट नहीं पाता। उससे छूटने का मार्ग क्या है? ज्ञानी पुरुष के मिलते ही सर्व दु:खों से मुक्ति मिलती है। औरों को जो दु:ख देता है, वह स्वयं दु:खी हुए बिना नहीं रहता।

सर्व दु:खों से मुक्ति कैसे पाई जाए? सुख-दु:ख मिलने का यथार्थ कारण क्या है? औरों को सुख देने से सुख मिलता है और दु:ख देने से दु:ख मिलता है। यह सुख-दु:ख प्राप्ति का कुदरती सिद्धांत है! जिसे यह सिद्धांत संपूर्ण समझ में आ जाता है, वही किसी को बिल्कुल दु:ख न देने की जागृति में रह सकता है। फिर मन से भी वह किसी को दु:ख नहीं पहुँचा सकता है। इसके लिए ज्ञानी पुरुष ही यथार्थ क्रियाकारी उपाय बता सकते हैं। परम पूज्य दादा भगवान, जो इस काल के ज्ञानी हुए, उन्होंने छोटा सा, सुंदर और संपूर्ण क्रियाकारी उपाय बताया है कि हर रोज़ सुबह में हृदयपूर्वक पाँच बार इतनी प्रार्थना करो कि, 'प्राप्त मन-वचन-काया से इस जगत् में किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दु:ख न हो, न हो, न हो।' इसके बाद आपकी ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी। किसी भी जीव को मारने का हमारा अधिकार बिल्कुल ही नहीं है, क्योंकि हम उसे बना नहीं सकते!

संसार में दु:ख क्यों है? उसका रूट कॉज़ है अज्ञानता! मैं स्वयं कौन हूँ? मेरा असली स्वरूप क्या है? यह नहीं जानने से सारे दु:ख सिर पर आ गए हैं। वास्तव में 'आत्मज्ञानियों' को इस संसार में एक भी दु:ख स्पर्श नहीं होता!

यदि आपको सुखी होना हो तो सदा वर्तमान में ही रहना! भूतकाल गया, सो गया। वह वापस कभी नहीं लौटता और भविष्यकाल किसी के हाथ में नहीं है। उसे कोई जानता भी नहीं। तो 'वर्तमान में रहे सो सदा ज्ञानी!'

गृहस्थ जीवन में बेटे-बेटियाँ, पत्नी, माँ-बाप, आदि की ओर

से हमें जो दु:ख मिलते हैं, वे हमारे ही मोह के रिएक्शन से मिलते हैं। वीतराग को कुछ भोगना नहीं पड़ता जीवन में। परम पूज्य दादा भगवान ने एक सुंदर बात बताई है कि घर एक कंपनी है। इस कंपनी में घर के सारे मेम्बर्स शेयर होल्डर्स हैं। जिसका जितना शेयर, उतना उसके हिस्से में भुगतने का आएगा। फिर सुख हो या दु:ख! मुनाफा हो या घाटा!

भगवान ने कहा है कि अंतर-सुख और बाह्य सुख का बैलेन्स रखना चाहिए। बाह्य सुख बढ़ेगा तो अंतर-सुख कम हो जाएगा और अंतर-सुख बढ़ेगा तो बाह्य सुख कम हो जाएगा।

चिंता होने का कारण क्या है? अहंकार, कर्तापन! वह जाए तो चिंता जाए।

कुदरत का दरअसल न्याय क्या है? हम अपनी भूलों से किस तरह से छूटें? निजदोष क्षय किस तरह से किया जाए? इन सारे प्रश्नों को पूज्य दादाश्री ने आसानी से हल करने का रास्ता प्रस्तुत पुस्तक में बताया है।

डॉ. नीरू बहन अमीन के

जय सच्चिदानंद

अनुक्रमणिका

सर्व दुःखों से मुक्ति

व्यवहार की खास दो बातें

प्रश्नकर्ता : हर एक व्यक्ति जो जन्म लेता है, उसका व्यवहार में कर्तव्य क्या है?

दादाश्री : यह जो पेड़ होता है, उसका कर्तव्य क्या है? वह अपने आप ही ज़मीन में से पानी पीता है और फल दूसरों को देता है। पेड़ को फिर बदले में आप कुछ देते हैं? ऐसे आप सारा दिन सब को सुख देना, किसी को दुःख मत देना। फिर आपको सुख मिल जाएगा। और कुछ नहीं, इतना ही समझना है। अब दुःख आए तो समझ लेना कि यह पीछे का अपना कोई हिसाब है, उससे आया है मगर अब तो दूसरे को सुख देने का व्यापार ही करना है।

बुद्धि का दुरुपयोग करोगे तो बाद में मेन्टल (पागल) हो जाओगे। जो सभी लोगों को फँसाता है, वह बुद्धि के दुरुपयोग के बिना किसी व्यक्ति को फँसा नहीं सकता। आँख का दुरुपयोग हुआ तो फिर अगले जन्म में आँख नहीं मिलेगी। कम दुरुपयोग किया तो आँख मिलेगी मगर उसका दुःख ही रहेगा और पूरा दर्शन नहीं होगा (पूरी दृष्टि नहीं होगी), ऐसे पूरा फायदा नहीं मिलेगा। हाथ का दुरुपयोग किया तो हाथ नहीं मिलेगा और वाणी का दुरुपयोग किया तो सारी वाणी ही चली जाएगी। सभी इन्द्रियों का सदुपयोग होना चाहिए।

दूसरी बात भगवान ने क्या कही है कि बिना हक़ की कोई चीज़ मत लो। बिना हक़ यानी कोई भी चीज़ जो तुम्हारी मालिकी की नहीं है, वहाँ तुम दृष्टि भी मत बिगाड़ो। ये लोग रास्ते में घूमते हैं तो कोई स्त्री अच्छी देखी कि उनकी दृष्टि बिगड़ जाती है। जो व्यक्ति भगवान को मानता है, वह व्यक्ति ऐसा तो नहीं होना चाहिए। क्योंकि वह स्त्री दूसरे की है। तुम्हारे लिए बिना हक़ की है, तुम्हारा हक़ नहीं है उस पर। मनुष्य में भी बुरे विचार आएँ, तो मनुष्य में और पशु में क्या फर्क है? दृष्टि भी बुरी नहीं होनी चाहिए, मन भी बिगड़ना नहीं चाहिए। नहीं तो उसकी बहुत जोखिमदारी है। बिना हक़ का विषय भोगना नहीं चाहिए। कुरान में भी लिखा है कि भले चार बार शादी करो मगर दूसरे की स्त्री पर दृष्टि मत बिगाड़ो। दूसरे की स्त्री पर दृष्टि बिगाड़े तो उसे बिना हक़ का भोगना बोला जाता है। हमारी इतनी ही बात सब की समझ में आ जाए तो हिन्दुस्तान देवलोक जैसा हो जाएगा।

(केवल) हक़ का विषय भोगना चाहिए। बिना हक़ के विषय से बहुत नुकसान हो जाता है, सब का माइन्ड फ्रेक्चर हो जाता है। स्त्री का माइन्ड फ्रेक्चर हो जाता है और पुरुष का माइन्ड भी फ्रेक्चर हो जाता है। अपने हक़ का विषय भुगतने में फियर (डर) नहीं लगता और बिना हक़ में बहुत फियर लगता है, विश्वासघात होता है। जो बिना हक़ का पैसा है, वह भी नहीं लेना चाहिए। कुदरत ने जो कुछ दिया है वही तुम्हारे हक़ का है, वही तुम्हारे लिए है। ये सब सेकेंडरी स्टेज की बात कही। जो रियल की बात है, वह स्टेज तो बहुत ऊँचा है। वह रियल जानना हो और आपकी समझ में आ जाएँ तो हमें कोई हरकत नहीं है, हम वह भी बता देंगे। सब बता देंगे। ज्ञान भी दे देंगे और सेल्फ रियलाइज़ेशन (आत्म साक्षात्कार) भी हो जाएगा।

मारने का अधिकार किसे?

जो क्रिएशन है, उसके अंदर भगवान नहीं है। क्रिएशन तो मैन

मेड (मानव निर्मित) होता है। मैन मेड में भगवान नहीं है। क्रीचर्स (प्राणी) के अंदर भगवान हैं, वह ज़िम्मेदारी समझ लेना। क्रिएशन को तोड़ डालोगे, उसके मालिक को पूछकर, तो कोई पाप नहीं लगेगा। क्रीचर्स को मार डालेगा तो पाप लगेगा, क्योंकि अंदर भगवान बैठे हैं। ये बग्स (खटमल) होते हैं न, उन्हें कभी मारते हो?

प्रश्नकर्ता : उन्हें तो देखते ही मार देता हूँ।

दादाश्री : ऐसा! इतना ज़ोरदार व्यक्ति(!!)

प्रश्नकर्ता : ऐसे बहुत सारे लोग हैं लेकिन यहाँ पर बैठने के बाद ऐसा नहीं बोलते कि मैं मारता हूँ।

दादाश्री : मगर ज़िम्मेदारी तो उनकी ही है न, मारने की? खटमल मारने से फिर खटमल काटते नहीं कभी? काटना बंद हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : दूसरे आ जाते हैं।

दादाश्री : वे बड़े-बड़े मज़बूत लोग भी जब नींद में होते हैं, तब ये खटमल उनके पास खाना खाते हैं (खून चूसते हैं)। नींद में सारी रात काटते हैं। वो जागने के बाद नहीं खाने देता। पर कोई खटमल भूखा नहीं रहता! उनकी खुराक ही ब्लड (खून) है। सब लोग सो गए कि वे सारी रात खाते हैं, तो फिर जागते हुए भी खाने दो न! होटल चालू रखो। मच्छर भी काटते हैं? उसका क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : मार देता हूँ।

दादाश्री : वह किसकी ज़िम्मेदारी है?! कोई साइन्टिस्ट एक भी मच्छर बना नहीं सकता। एक मच्छर भी कोई बना सकता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो फिर, जो चीज़ हम बना नहीं सकते, उसे मारने

का अधिकार नहीं है। जो बना सकता है, उसी को ही तोड़ने का अधिकार है। पुलिस वाला अगर गाली देता है, तो क्या करते हो? उसे मारते हो?

प्रश्नकर्ता : उसके सामने तो चुप रहना ही पड़ता है।

दादाश्री : और बाघ के पास, शेर के पास क्या होता है?

सभी जीव के अंदर भगवान हैं, तो किसी भी जीव को तुम मारोगे क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, अपने से किसी भी जीव को दुःख न हो, ऐसा करने का। छोटे से छोटा जीव हो तो भी उसे दुःख नहीं हो ऐसे चलने का, ऐसे रहने का। घर में किसी को दुःख देते हो? मदर (माता जी) को, फादर (पिता जी) को?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

दादाश्री : तो फिर किसको दुःख देते हो?

प्रश्नकर्ता : किसी को भी नहीं।

दादाश्री : और तुम्हें कोई दुःख देता है? कौन देता है?

प्रश्नकर्ता : घर में कोई नहीं देता, मगर बाहर सब दुःख देते हैं।

दादाश्री : सौ-दो सौ व्यक्ति दुःख देते हैं या दो-चार व्यक्ति दुःख देते हैं?

प्रश्नकर्ता : दो-चार।

दादाश्री : ओ हो हो हो! इतनी बड़ी दुनिया में दो-चार का क्या हिसाब?! यहाँ पूरे रूम (कमरे) में मच्छर हों और सब मच्छर काटें तो ठीक बात है। (पर) ये तो दो-चार मच्छर काटें तो कौन सी बड़ी बात है?!

प्रश्नकर्ता : दो ही व्यक्ति दुःख देने वाले हों तो भी बहुत होता है।

दादाश्री : ऐसा? तुम किसी को दुःख नहीं दोगे तो बाहर वाला कोई भी दुःख नहीं देगा। तूने कभी किसी को दुःख दिया था? दुःख दिए बिना तो अपने को कोई दुःख नहीं देता। हमें कोई दुःख नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : मुझे विश्वास है कि इस जन्म में मैंने किसी को दुःख नहीं दिया, फिर भी लोग मुझे दुःख देते हैं।

दादाश्री : हाँ, वह इस जन्म का नहीं होगा, तो वह पीछे का हिसाब होगा। इस जन्म के बहीखाते में नहीं मिलता है, यह पिछले बहीखाते (खाते) का है। मगर कुछ न कुछ तो होगा न? वो सब पीछे का बहीखाता चल सकता है अभी। तुम्हें बहुत दुःख देता है? मारता-पीटता है? जेल में रख देता है? क्या दुःख देता है? देखो, दुःख तो किसे कहा जाता है कि कोई व्यक्ति आपको खाना नहीं दे तो अपने को दुःख है, सोने की जगह नहीं मिले तो दुःख है, कपड़े पहनने को नहीं मिले तो दुःख है। तो फिर तुम्हें क्या कपड़े पहनने को नहीं मिलते?

प्रश्नकर्ता : वह सब तो मिलता है।

दादाश्री : तो फिर क्या दुःख है तुम्हें? तुम्हें जो दुःख देता है, उसको हमारे पास ले आओ, तो हम बोल देंगे कि इसका क्या हिसाब है, इसका हिसाब पूरा कर दो, सब जमा कर दो, खाता बंद कर दो। ऐसा करोगे न? हाँ, बुला लो। हम उसका खाता पूरा करा देंगे। तो सब दुःख पूरा हो जाएगा।

इधर आया है, हमें मिला है, तो उसके पास कोई दुःख रहता ही नहीं।

सुख-दुःख का वास्तविक स्वरूप

इस दुनिया में दुःख है ही नहीं। मगर हर कोई व्यक्ति दुःखी

है, वह रोंग बिलीफ से दु:खी है। और सारा दिन क्या बोलता है, 'मैं कितना दु:खी हूँ, मैं कितना दु:खी हूँ।' उससे पूछो कि 'आज खाने का चावल है? तेल है? सबकुछ है, तो तुम्हें कोई दु:ख नहीं है।' मगर वाइफ (पत्नी) के साथ झगड़ा करता है, लड़के के साथ झगड़ा करता है और दु:खी होता है।

दुनिया का कायदा क्या है? आपको अगले जन्म में क्या-क्या चाहिए, उसका टेन्डर भरो। क्योंकि आपका *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ) कोई नहीं है। जो है वह आप खुद ही हैं। मगर आप जिस माइल पर हैं, उस माइल की चीज़ ही आपको मिलेगी, दूसरे माइल की चीज़ नहीं मिलेगी! आप 97 माइल पर हैं तो 97 माइल पर जो कुछ आपको चाहिए, वह बोल दो, तो आप बता देंगे कि 'हमें रहने का मकान भी चाहिए, तीन रूम चाहिए।' वो सब लिख लिया। फिर उतनी ही चीज़ आपको मिलती है। तो फिर दु:ख कैसे होता है? कि हमारे पास तीन रूम (कमरे) हैं और हमारे फ्रेन्ड (मित्र) के पास नौ रूम हैं। यह दु:ख की शुरुआत हो गई, बिगिनिंग ऑफ मिज़री और टेन्डर में सिर्फ पत्नी लिखी थी, मगर पूर्ति के समय सास-ससुर, साला-साली, वे सभी साथ आएँगे। आपकी समझ में आया न? एक स्त्री के लिए कितनी ज़िम्मेदारी लेनी पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : इस संसार में प्राणी दु:खी क्यों है? इसका निदान क्या है? इससे छुटकारा किस तरह मिले?

दादाश्री : किसी भी प्राणी को जो दु:ख है, तो वह उसकी अज्ञानता से है। चार व्यक्ति इस रास्ते के बदले उस रास्ते पर चले गए तो उनको दु:ख होता है या नहीं? बस, ऐसा ही दु:ख है। अज्ञानता से दु:ख है और ज्ञान से सुख है। अज्ञानता से माया का अपने पर राज हो जाता है और ज्ञान से भगवान का राज हो जाता है।

एक बड़ा सेठ है, उसने दारू नहीं पिया तब तक तो कैसी अच्छी बातें करता है। फिर दारू की एक बोतल पी ली, तो कोई अलग ही बातें बोलता है। वह कौन सी शक्ति काम करती है?

प्रश्नकर्ता : दारू काम करती है।

दादाश्री : तो यह जगत् भी दारू से चलता है, मगर ये मोह रूपी ब्रांडी (दारू) से चल रहा है। मनुष्य का मोह चला जाए, तो समाधि हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : ट्रेन से आते वक्त प्लेटफॉर्म पर एक अंधे को देखा, तब मेरे मन में हुआ कि दुनिया में सब दुःखी हैं।

दादाश्री : जगत् में दो प्रकार के अंधे मनुष्य हैं। एक तो अंधा, जैसा आपने देखा था, जिसकी आँखें नहीं थीं और अंधा हो गया था और दूसरे, इस वर्ल्ड में जो सब लोग हैं, वे भी अंधे हैं। आँख से अंधा है, वह अपना खुद का नुकसान नहीं करता है और ये दूसरे लोग अपना खुद का सारा दिन नुकसान ही करते रहते हैं। वे भगवान की भाषा में आँख से देखते हुए भी अंधे हैं।

भगवान की तो एक ही भाषा है और लोगों की सब की अलग-अलग भाषा है। तुम स्त्री को डिवॉर्स दोगे और दूसरा कहता है कि हमें स्त्री चाहिए। तुम्हारी लैंग्वेज (भाषा) में वह स्त्री बहुत बुरी है और दूसरे की लैंग्वेज में वह बहुत अच्छी है। मगर भगवान की भाषा में वे दोनों बातें गलत हैं। यह लोगों की भाषा की बात है।

दुनिया में दुःख है ही नहीं। मगर अंधा है, इससे दुःख लगता है। जब धीरे-धीरे आँखें खुलती हैं, तब थोड़ा-थोड़ा सुख लगता है। फिर जब पूरी आँख खुलती है तो दुःख है ही नहीं दुनिया में। दुनिया में दुःख होता ही नहीं कभी। सारे दुःख अपनी-अपनी 'भाषा' में हैं। अगर अंधा नहीं होता, तो दुःख ही नहीं। इसलिए वीतराग भगवान ने बोला था कि समकित कर लो। समकित होने पर थोड़ी-थोड़ी आँखें खुलेंगी और थोड़ा-थोड़ा सुख बढ़ेगा। पूरी आँखें खुल गईं कि मोक्ष हो गया।

रोंग बिलीफ को मिथ्या दर्शन बोलते हैं और राइट बिलीफ को सम्यक् दर्शन बोलते हैं। मिथ्या दर्शन से भौतिक सुख मिलता है। वह

आरोपित सुख है, सच्चा सुख नहीं है। सच्चा सुख आत्मा में है। मगर यह क्या कहता है कि इस जलेबी में सुख है। जलेबी में सुख है ही नहीं। मगर कुछ लोग बोलेंगे कि जलेबी में सुख है और दूसरे लोग बोलेंगे कि जलेबी हमें पसंद नहीं है। कुछ लोग जलेबी को हाथ भी नहीं लगाते। यह तो, जैसा भाव किया ऐसा अंदर से ही सुख निकलता है। आत्मा का सुख आरोपित करता है कि जलेबी में सुख है, फिर जलेबी खाता है तो उसको अच्छा लगता है। हम तो पूरी ज़िंदगी में एक घड़ी भी नहीं लाए। क्योंकि इसमें क्या सुख है? सुख तो आत्मा के अंदर है। वह स्वतंत्र सुख है। हमें जेल में ले जाएँ तो भी हमें अच्छा लगेगा कि हम घर पर होते हैं, तो दरवाज़ा भी हमें खुद ही बंद करना पड़ता है, इधर तो पुलिस वाला दरवाज़ा बंद करेगा। हमारा तो फायदा ही है। ऐसी दृष्टि बदल गई तो कोई परेशानी है फिर? परेशानी सब लौकिक दृष्टि से है। वह लौकिक दृष्टि सब रोंग बिलीफ है। सब लोग जिसमें सुख मानते हैं, उसमें आप भी सुख मानते हैं, वो रोंग बिलीफ है। सब लोग जिसमें सुख मानते हैं, मगर उसमें से सुख तो मिलता ही नहीं और वह आरोपित भाव ही है। उस सुख के पीछे फिर दु:ख आता है। आपने दु:ख देखा है कभी? हमने पच्चीस साल से कभी दु:ख नहीं देखा है। सुख भी नहीं, दु:ख भी नहीं, हमें तो निरंतर परमानंद है। सुख और दु:ख हैं, वह तो वेदना है। जिसे आम पसंद है, वह आम खाएगा तो उसे ठंडक हो जाती है। वह *शाता* (सुख परिणाम) वेदनीय है और जिसे आम पसंद नहीं है, यदि उसे आम खिलाएँगे तो उसे *अशाता* (दु:ख परिणाम) होती है। यह *अशाता* वेदनीय है। यह वेदनीय सच्चा सुख नहीं है। वह सच्चा सुख तो सनातन सुख है।

जैसे मछ्ली तड़पती है, ऐसे सारा दिन पूरी दुनिया तड़प रही है। चिंता हो गई तो फिर वह रिलेटिव एडजस्टमेन्ट करता है। नहीं तो दूसरी क्या मेडिसिन (दवा) लगाएँ? सिनेमा में चलो। लेकिन इनको मालूम नहीं है कि इस दवा से क्या फायदा है? इससे तो वह अधोगति में जाएगा। अंदर खराबी हो गई, चिंता हो गई, उस समय

यदि कुछ योग में बैठ गया, भजन में बैठ गया और नहीं पसंद हो तो भी स्ट्रोंग रहा तो वो ऊपर चढ़ता है। जो पसंद है, वहाँ मूर्च्छित होता है और वह नीचे चला जाता है। ऐसे सिनेमा जाने से नीचे ही चला जाएगा। 'नहीं पसंद आता' वह सब आत्मा का विटामिन है मगर उसका ख्याल नहीं है।

एक सेकन्ड भी क्लेश करने के लिए यह वर्ल्ड (जगत्) नहीं है। जो हो रहा है वह न्याय ही हो रहा है। कोर्ट का न्याय तो पक्षपाती होता है, गलत भी होता है। मगर कुदरत का न्याय तो दरअसल न्याय ही होता है। जो दिव्यचक्षु से देख रहे हैं, उनको बिल्कुल करेक्ट (सही) दिखाई देता है। मगर जिसके पास वह दृष्टि नहीं, उसकी समझ में नहीं आएगा, तब तक वह दु:खी ही होता रहेगा।

केवल रियल व्यू पोइन्ट नहीं चलेगा, रिलेटिव व्यू पोइन्ट पहले चाहिए। दु:ख रिलेटिव में है और पूरी दुनिया ही दु:खी है। रियल में दु:ख नहीं है। रियल में दृष्टि मिल गई, फिर कोई दु:ख नहीं है। मगर अभी तक दृष्टि रिलेटिव में ही है। हम आपकी रिलेटिव दृष्टि को रियल कर देंगे, तो फिर आपको आनंद ही रहेगा। मात्र दृष्टि का फर्क है। हम यह साइड देखते हैं, आप वह साइड देखते हैं।

जहाँ सच्चिदानंद है, वहाँ कुछ भी दु:ख नहीं है और दु:ख है, वहाँ सच्चिदानंद नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अब मैं मानता हूँ कि दु:ख है ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, दु:ख तो है ही नहीं। दु:ख तो सिर्फ रोंग बिलीफ ही है। जिसे रोंग बिलीफ है, वहाँ दु:ख है। जिसे रोंग बिलीफ नहीं, वहाँ दु:ख ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आध्यात्मिक दृष्टि से तो दु:ख है ही नहीं।

दादाश्री : हाँ, मगर ऐसी बात बोलने से तो नहीं चलेगा। अध्यात्म में तो कुछ दु:ख ही नहीं है लेकिन ऐसा व्यवहार में नहीं

चलेगा। हर एक व्यक्ति को दु:ख होता है, यह फैक्ट (सच) बात है और 'ज्ञानी पुरुष' को तो आधि, व्याधि और *उपाधि* (बाहर से आने वाला दु:ख, परेशानी) में भी समाधि रहती है, यह भी फैक्ट बात है। आपको कभी दु:ख हुआ है?

प्रश्नकर्ता : मैं मान रहा हूँ कि अध्यात्म में दु:ख है ही नहीं।

दादाश्री : वह तो आपकी मान्यता से है, आपकी बिलीफ में ऐसा है कि दु:ख है ही नहीं। मगर आपको तो दु:ख है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : वह तो वेदना है।

दादाश्री : वेदना? तो वेदना ही दु:ख है।

प्रश्नकर्ता : दु:ख मन को होगा, वेदना शरीर को होगी।

दादाश्री : नहीं, वेदना मन को ही होती है। शरीर को भी वेदना होती है। मगर वेदना क्यों कहा? कि मन है इसलिए वेदना कहा, मन नहीं होता तो वेदना नहीं होती थी। मन को ही वेदना होती है।

सारा जगत् अंधश्रद्धा पर चलता है। यह पानी पीते हैं, तो उसमें किसी ने पॉइज़न (ज़हर) नहीं डाला उसकी क्या गारन्टी है? मगर अंधश्रद्धा से पानी पीते हैं न?! ये खाना खाते हैं, उसमें क्या डाला है, उसकी क्या कुछ गारन्टी है? मगर जगत् में सब अंधश्रद्धा पर ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : श्रद्धा के बल पर हमारे दु:ख हम भूल सकते हैं या नहीं?

दादाश्री : श्रद्धा दो प्रकार की हैं, एक रोंग बिलीफ है और एक राइट बिलीफ है। आपको रोंग बिलीफ की श्रद्धा से कुछ फायदा नहीं मिलेगा। थोड़ी देर शांति रहेगी, मगर पूरा फायदा नहीं मिलेगा, प्रॉब्लम सॉल्व नहीं हो जाएगा। आपका नाम क्या है?

प्रश्नकर्ता : रवीन्द्र।

दादाश्री : क्या आप सचमुच रवीन्द्र हैं? आप रवीन्द्र हैं वह सच बात है?

प्रश्नकर्ता : हमें तो सच लगता है।

दादाश्री : यह तो आपका नाम है, यह पहचान के लिए है, मगर आप कौन हैं?

प्रश्नकर्ता : यह पहचानने की कहाँ ताकत (क्षमता) है?

दादाश्री : उसें पहचानने की ज़रूरत है। आप रवीन्द्र हैं, यह हम भी मानते हैं, वह पहचान के लिए है। मगर आपको ऐसी श्रद्धा हो गई है कि मैं रवीन्द्र ही हूँ। यह रोंग बिलीफ है।

प्रश्नकर्ता : तो सही बिलीफ क्या है?

दादाश्री : वह सही बिलीफ 'ज्ञानी पुरुष' दे देते हैं। सब रोंग बिलीफ फ्रेक्चर करते हैं और राइट बिलीफ दे देते हैं।

खुद का स्वरूप जान लिया, फिर बिल्कुल शांति रहती है। जहाँ तक यह नहीं जाना, वहाँ तक दु:ख है। 'ज्ञानी पुरुष' की कृपा से खुद की पहचान हो सकती है। फिर सब दु:ख चले जाते हैं। आसपास दु:ख हो, उसमें भी समाधि रहे, उसका नाम वीतराग विज्ञान। कोई गाली दे तो भी सुख नहीं जाता। और इस संसार के सब लोग क्या करते हैं? किसी ने गाली दी तो बर्दाश्त कर लेते हैं। लेकिन जब खुद की पहचान हो गई, तो फिर कुछ बर्दाश्त नहीं करना पड़ता। इतना आनंद होता है कि फिर कुछ दु:ख स्पर्श करता ही नहीं।

सुख प्राप्ति के कारण

किसी भी व्यक्ति को परेशान नहीं करना चाहिए। मानवधर्म तो होना चाहिए न? मानवधर्म क्या कहता है कि आपको सुख कब मिलेगा? जब आप दूसरों को सुख देंगे तो आपको सुख मिलेगा। दूसरों को जब दु:ख देंगे तो आपको दु:ख मिलेगा। इसलिए सब को

सुख दें। इसमें फर्स्ट प्रिफरेंस मनुष्य हैं। वही मानवधर्म है। इससे आगे भी धर्म है, वह लास्ट (अंतिम) धर्म है। उसमें मन में भी हिंसा नहीं होनी चाहिए।

एक व्यक्ति रोड़ पर चल रहा है और सामने से एक स्कूटर वाला आया और टकरा गया, एक्सिडेन्ट हुआ। रास्ते पर जाने वाले लोग हैं, उन्हें अंदर दु:ख हो जाएगा, तो कोई व्यक्ति तो अपनी धोती फाड़कर उसको बाँध देता है। सौ रुपये की धोती है, मगर उस समय हिसाब नहीं देखता कि मैं क्या कर रहा हूँ। जब धोती फाड़कर बाँधेगा, तब उसे आनंद होता है। धोती फाड़ दी, उसका बदला उसी समय मिल जाता है। क्योंकि तुम्हारी जो चीज़ है, वह दूसरे के लिए दी, उससे आनंद ही होता है। खुद के लिए लगाने पर आनंद नहीं होता है।

हमारी लाइफ ऐसे पहले से ही दूसरों के लिए ही है। हमने कभी हमारे लिए कुछ किया ही नहीं। तो हमें कितना आनंद होता होगा! उस समय हमें ज्ञान नहीं था, तो भी हम क्या करते थे कि 'भई, आपको क्या तकलीफ है? आपको क्या तकलीफ है?' ऐसा सब को पूछते थे और हेल्प करते थे।

प्रश्नकर्ता : भूतकाल भुलाया नहीं जाता तो क्या करना?

दादाश्री : भूतकाल, पास्ट टाइम गॉन फॉर एवर! डॉन्ट वरी फॉर पास्ट टाइम! जो भूतकाल हो गया, उसके लिए तो कोई फूलिश (मूर्ख) व्यक्ति भी नहीं सोचता। तो भूतकाल गॉन, वह सोचने का नहीं और भविष्यकाल 'व्यवस्थित' के ताबे (हाथ) में है। तो हमें क्या करने का? वर्तमान में रहने का। अभी हम इधर आए न, तो हम तुम्हारे साथ बात करते हैं, उसे आराम से सुनना। दूसरी किसी भी चीज़ की तलाश नहीं करना। ऐसे वर्तमान में रहने का।

अंग्रेजी में जो बोलते हैं कि 'वर्क वाइल यू वर्क ऐन्ड प्ले वाइल यू प्ले।' तो वहाँ फॉरेन (विदेश) में कई लोगों को ऐसा रहता है और इधर किसी व्यक्ति को ऐसा नहीं रहता, क्योंकि यहाँ विकल्पी लोग हैं।

जिसके हाथ में वर्तमान आ गया, उसका भगवान से भी ऊँचा पद कहा जाता है।

क्या आपको दुःख है?

प्रश्नकर्ता : हमने बड़ी प्रामाणिकता से नौकरी की है, फिर भी आजकल हमारे सिर पर परेशानियाँ बहुत हैं, कभी-कभी रात को नींद भी नहीं आती। आप कुछ रास्ता दिखाइए।

दादाश्री : अरे, किसलिए परेशानियों की चिंता रखकर फिरते हो? सारी दुनिया की परेशानियाँ सिर पर रख लीं, यह तो ओवरवाइज़नेस है। कम टु द वाइज़नेस!! और बोलो कि 'हमें कोई तकलीफ नहीं। हमारे जैसा कोई सुखी व्यक्ति नहीं है।' रात को थोड़ी खिचड़ी और थोड़ी सब्ज़ी मिली तो फिर सारी रात चैन से सो पाएँगे। आपने प्रामाणिकता से सर्विस की है, फिर आपके पास भगवान का सर्टिफिकेट है, नहीं तो इस काल में ऐसा सर्टिफिकेट कहाँ से लाएँ। देखो न, फिर भी सिर पर कितना बोझ लेकर फिरते हो! अब घर जाकर स्त्री को, बच्चों को बोल दो कि, 'अपने को भगवान ने बहुत दिया है और अपने को बहुत सुख है।' ऐसा बोलकर सब साथ में आराम से चाय पिओ। ये दुनिया अपनी ही है!!

कहाँ से ऐसा ज्ञान लाए? यह ओवरवाइज़ का ज्ञान आप कहाँ से लाए? सारे गाँव की चिंता लेकर फिरते हो!! किसलिए बुद्धि चलाते हो? बुद्धि के कहने पर चलोगे तो एक दिन बुद्धू हो जाओगे। जितने लोग बुद्धि को डेवेलप करने गए कि सब बुद्धू हो गए। बुद्धि तो लाइट (प्रकाश) है मात्र। लाइट से काम लेने का है। हम ज्ञानी होकर भी हमारे पास बुद्धि बिल्कुल नहीं है, हम अबुध हैं और तुम तो बुद्धि चलाते हो, उसको डेवेलप करते हो। बुद्धि को ज़्यादा डेवेलप मत करो, नहीं तो बुद्धू हो जाओगे। बुद्धि तो अंदर बोले कि, 'अपने को फ्लैट नहीं देगा, तो क्या होगा?' इसमें क्या होने वाला है?! तुम्हारे फ्लैट में वह रहता है, तो वह उसकी मर्ज़ी की बात है? उसको संडास

जाने की शक्ति भी नहीं है। तो रहने वाला क्या करेगा? वह भी कर्म का गुलाम है। इस संसार में किसी का गुनाह नहीं है। जिसको अड़चन आती है, उसका गुनाह है। आपको परेशानी हुई तो वह आपका गुनाह है। इसमें आपका पाप है और सामने वाले का गुनाह नहीं है, उसका पुण्य है। आज शाम को खाना तो मिल जाएगा न? आपको खाने-पीने की तकलीफ नहीं है न? वह मिल गया तो बहुत हो गया, आज तो हम दिल्ली के बादशाह हैं। कल की बात कल देखी जाएगी। कल यदि नींद से जागे और बिस्तर में से उठे तो समझ लेना कि आज का दिन मिल गया। दूसरा आगे का विचार ही नहीं करने का। भगवान क्या बोलते हैं, 'मैं उसके लिए सोचता हूँ और यह अपने खुद के लिए सोचता है, तो फिर मैं छोड़ देता हूँ।' भगवान के पास बच्चे की तरह रहना चाहिए। अपने हाथ में लगाम नहीं लेने की। और बुद्धि को बोलो कि, 'अब तुम्हारी बात हम सुनने वाले नहीं। हमें तुम्हारी सलाह पसंद नहीं आती है', ऐसा बुद्धि का इन्सल्ट (अपमान) कर देने का। जो बुरी बात बताती है, जिसके साथ ठीक नहीं लगे तो उसका इन्सल्ट कर देने का। अपने पास कोई दु:ख ही नहीं है, दु:ख आने वाला भी नहीं। सिर्फ भड़कता ही रहता है कि ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा। अरे, कुछ भी होने वाला नहीं, हम तो मालिक हैं। मालिक को क्या होने वाला है?

सुख भी कीमती है और दु:ख भी कीमती है। मुफ्त में तो किसी को सुख भी नहीं मिलता है और दु:ख भी नहीं मिलता है। दु:ख की कीमत देनी पड़ती है फिर दु:ख मिलता है। हमने कीमत भरी नहीं है, इसलिए हमें दु:ख आता नहीं है। ये क्रोध, मान, माया, लोभ सब आपके पास तैयार हैं, इसलिए तुम वे भर देते हो, हमारे पास ये कुछ नहीं है। हमें तो ये सुख भी नहीं चाहिए और दु:ख भी नहीं चाहिए। ये सब कल्पित हैं। वह तो कल्पना की है आपने। कोई व्यक्ति बोले कि हमें लड्डू ठीक नहीं लगता है, तो उसको अच्छा नहीं लगेगा। और तुम्हें लड्डू ठीक लगता है, तो तुम्हें अच्छा लगेगा। तुमने कल्पना की तो तुम्हें अच्छा लगता है। आपने आत्मा का आनंद

इसमें डाला, तो फिर आनंद लगा। किसी भी चीज़ में आनंद नहीं होता, वो तो आपने कल्पना की, उसकी करामात है। बाहर की किसी भी चीज़ में आनंद नहीं है। आनंद तो, अपने खुद के अंदर ही है। खुद के स्वरूप में ही आनंद है।

रियली स्पीकिंग (वास्तव में), इस दुनिया में दु:ख और सुख नहीं है। 'हमें यह दु:ख है, वह दु:ख है' वह सब बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट से है, सिर्फ कल्पना है। आप बोलें कि, 'हम पैसे की रिश्वत नहीं लेते।' इसमें ही हमें सुख है। और दूसरा कहता है कि 'पैसे की रिश्वत लेने में हमें सुख है।' वो रिलेटिव व्यू पोइन्ट है, नॉट रियल व्यू पोइन्ट!

जब तक भौतिक सुख प्रिय है, तब तक भगवान नहीं मिलते हैं। हमें भौतिक सुख नहीं चाहिए, ऐसा यदि तय कर लिया तो भगवान मिल जाते हैं। हम भी खाते-पीते हैं मगर हम को नहीं चाहिए, फिर भी ऐसे ही आ जाता है। हमें अपना खुद का सुख मिला, फिर और क्या चाहिए? खुद का बहुत सुख आ जाए, उसे सनातन सुख बोला जाता है। अतीन्द्रिय सुख का किंचित्‌मात्र टेस्ट (स्वाद) कर लिया तो दूसरा सब इन्द्रिय सुख फीका लगेगा। अतीन्द्रिय सुख नहीं मिले, तब तक इन्द्रिय सुख अच्छा लगता है। इन्द्रिय सुख रिलेटिव सुख है।

सच्चा सुख किसे कहा जाता है कि जो सनातन है। एक बार आया तो फिर कभी जाता ही नहीं। हम अभी आधि में हैं, व्याधि में हैं कि *उपाधि* में हैं?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है कि संसारी व्यक्ति आधि, व्याधि और *उपाधि* से घिरा हुआ है।

दादाश्री : हाँ, तो हम किसमें हैं? आपको क्या लगता है? हम निरंतर समाधि में रहते हैं। कोई गाली दे तो भी हमारी समाधि नहीं जाती और कोई फूल चढ़ाए तो भी हमारी समाधि नहीं जाती। आपको तो फूल चढ़ाए, गाली दे तो समाधि चली जाएगी। आपको

कोई पैर में गिरकर दर्शन करने आएगा तो आप घबरा जाओगे। आप मान भी पचा नहीं सकते और अपमान भी पचा नहीं सकते। हमें तो मान मिले तो भी हरकत नहीं और अपमान मिले तो भी हरकत नहीं है। हमारे यहाँ वैल्यूएशन का डिवैल्यूएशन हो गया है। सब जगह अपमान की डिवैल्यूएशन थी, तो हमने उसका वैल्यूएशन कर दिया और मान की वैल्यूएशन थी, उसका डिवैल्यूएशन कर दिया। दोनों को नॉर्मल कर दिया।

ऊर्ध्वगति के लॉ

प्रश्नकर्ता : ज़िंदगी में त्रास है और पीड़ा से परेशान हूँ, उसका कोई मार्ग चाहिए।

दादाश्री : परेशानी अच्छी नहीं लगती?

प्रश्नकर्ता : परेशानी से तो व्यक्ति को अक्ल आती है, नहीं तो अक्ल कभी नहीं आए।

दादाश्री : हाँ, तो परेशानी आपके पास रखें। क्यों फेंक देते हो? आपको परेशानी पसंद है? परेशानी मार्ग पर रहना या तो शांति मार्ग पर रहना। दो मार्ग हैं। शांति में परेशानी नहीं रहती। आपको कौन सा मार्ग पसंद है?

प्रश्नकर्ता : हमें तो शांति मार्ग ही पसंद है। लेकिन इस समय परेशानी है।

दादाश्री : हाँ, तो परेशानी का उपाय है। मगर फिर शांति का मार्ग अपने हाथ में आ जाता है। शांति मार्ग और परेशानी मार्ग, दोनों का मिक्स्चर मत करना। मिक्स्चर करोगे तो आपको फायदा नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : एक ही मार्ग शांति का रखूँगा।

दादाश्री : वह ठीक बात है।

प्रश्नकर्ता : मगर जो भलाई करता है, उसके पर ही ज़्यादा परेशानियाँ, ज़्यादा दु:ख आता है। ऐसा क्यों?

दादाश्री : जो भलाई करता है, उधर परेशानी का फर्स्ट प्रिफरेंस है और जो चोर है, बदमाश है, उसके लिए परेशानी का प्रिफरेंस नहीं है।

कुदरत का काम कैसा है? कुदरत क्या कहती है कि जो अधोगति में जाने वाला है, उसे हेल्प करो और जो ऊर्ध्वगति में जाने वाला है, उसे पकड़ा दो। चोर ने गुनाह किया है और अधोगति में जाने वाला है, इसलिए उसे कुदरत नहीं पकड़वाती। स्ट्रेट फॉरवर्ड (सीधे) व्यक्ति को कुदरत पकड़वा देती है।

प्रश्नकर्ता : वह जो तकलीफ है, वह सिर्फ मेरे लिए सीमित रहे, लिमिटेड रहे तो ठीक है, लेकिन उससे मेरे बाल-बच्चे को, सब को परेशानी होती है, तो इसका यह तो मतलब नहीं कि कुदरत हम सब को ऊर्ध्वगति में ले जाना चाहती है?

दादाश्री : हाँ, पूरी फैमिली (परिवार) ऊर्ध्वगति में जाने वाली है। ऊर्ध्वगति में जाने वाले को इस संसार में राग नहीं हो, ऐसी चीज़ें मिलती हैं। उसे पसंद नहीं हो, ऐसा होता है। अधोगति में जाने वाले का मोह ज़्यादा बढ़ता है और ऊर्ध्वगति में जाने वाले का मोह टूट जाता है। जैसे जिसका लड़का अच्छा हो, लड़की अच्छी हो, तो वह भगवान का नाम भूल जाता है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं है। अच्छे लड़के-लड़की वाले भी भगवान का नाम लेते हैं।

दादाश्री : मगर इसमें मोह ज़्यादा बढ़ता है। 'यह हमारा लड़का ऐसा है, यह हमारी लड़की ऐसी है', ऐसा उसे मोह होता है। कुदरत का नियम क्या है कि जिसे ऊर्ध्वगति में ले जाने का है, उसे हेल्प करती है।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे?

दादाश्री : राग न हो ऐसी चीज़ देती है, कि जिससे यह संसार

अच्छा नहीं है, ऐसी उसे बिलीफ हो जाती है। जिसे अधोगति में जाने का है, उसे तो इस संसार में इधर बहुत आनंद है कि मेरा लड़का भी अच्छा है, ये मकान भी अच्छा है, पैसा भी बहुत है।

प्रश्नकर्ता : हमारे पास के जो लोग हैं, उनका नया धंधा है, उनको कमाई बहुत है, घर अच्छा है, सब मज़े में हैं और हमारे पास अगर कोई आए, तो उनको बिठाने के लिए ठीक सा आसन तक नहीं है, तो हमें शर्म महसूस होती है।

दादाश्री : ऐसी कोई ज़रूरत नहीं। हमारा बड़ौदा में घर है, वहाँ हमारा बैठने का रूम 10 x 12 का है। हम ठेकेदारी का धंधा करते हैं, बहुत बड़ा धंधा करते हैं लेकिन हमारे यहाँ सोफासेट भी नहीं है। कहाँ से लाएँ वह? वह सच्चे पैसे से नहीं होता है। हमारी कंपनी बहुत कमाती है लेकिन घर में हम छ: सौ-सात सौ रुपये ही देते हैं।

हमारे पास एक बड़े जज आए थे। उनकी पत्नी उन्हें क्या कहती थी कि, 'तुम्हारे फ्रेन्ड सर्कल में सब ने बंगला बना लिया है और हमें भाड़े के मकान में रहना पड़ता है।' वह मुझसे पूछने लगे कि 'मेरी पत्नी ऐसा कहती है, क्या करना चाहिए?' उनकी पत्नी कहती है कि मकान क्यों नहीं बनाया? तो उसके मन में क्या आता है? 'रिश्वत तो लेनी चाहिए'। ऐसे बिलीफ बदलती है। उसके सभी फ्रेन्ड्स रिश्वत लेते थे मगर वो कभी रिश्वत नहीं लेता था। तो हमने कहा, 'तुम्हारी बिलीफ नहीं बदलनी चाहिए। यह तो इग्ज़ामिनेशन है।'

भगवान क्या कहते हैं, जो रिश्वत लेता है मगर कहता है, 'ऐसा नहीं करना चाहिए, ऐसा क्यों हो जाता है?' तो भगवान उसे छोड़ देते हैं। और जो रिश्वत नहीं लेता और कहता है, रिश्वत लेनी चाहिए, वह सच्चा गुनहगार है, वह पकड़ा जाता है। जो रिश्वत नहीं लेता लेकिन लेने का विचार किया वह कॉज़ेज़ है। फिर उसका इफेक्ट ऐसा आएगा कि वह रिश्वत लेगा। जो रिश्वत लेता है मगर नहीं लेने का विचार है, ऐसे कॉज़ेज़ हैं, फिर इफेक्ट में वह रिश्वत लेगा ही नहीं।

सब ने रिश्वत ली और मकान बना लिया और इसने रिश्वत नहीं ली। अभी वह सारी ज़िंदगी कितनी भी कोशिश करे तो भी वह नहीं ले सकेगा। मगर उसकी पत्नी ने क्या बोल दिया, 'तुम रिश्वत लेते नहीं, इसलिए हमारा मकान नहीं है'। तब उसकी बिलीफ बदल जाएगी कि रिश्वत लेनी चाहिए। यह कितनी जोखिमदारी है? जोखिमदारी है, यह तो समझना चाहिए न? ज़िम्मेदारी क्या है, उसे मालूम नहीं है, ऐसी ही कितनी ज़िम्मेदारियाँ लेता है। यू आर होल ऐन्ड सोल रिस्पोन्सिबल फॉर योरसेल्फ। गॉड इज़ नॉट रिस्पोन्सिबल फॉर यॉर लाइफ। दूसरा कोई व्यक्ति, आपकी पत्नी, आपका लड़का आपकी ज़िंदगी के लिए ज़िम्मेदार नहीं है। तो जो विचार करने हैं, वे अच्छे विचार करना। जो काम करने हैं, वे अच्छे काम करना, क्योंकि ज़िम्मेदारी आपकी है। फिर भगवान भी इसमें से छुड़ा नहीं सकते।

यह जन्म तो मनुष्य का मिला है मगर ऐसे विचार करोगे तो दूसरा जन्म मनुष्य का आएगा या नहीं भी आएगा। ऐसा है, पूर्व जन्म के संस्कार अच्छे हों तो आज इसको तकलीफ नहीं होगी, रिश्वत नहीं लेगा। और अभी संस्कार बिगाड़ दिए तो अगले जन्म में सब परेशानी हो जाएगी।

घर ऐसी कंपनी है कि उसमें सब का शेयर (हिस्सा) है, घर के सब मेम्बर (सदस्य) हैं, वे सब शेयर होल्डर हैं। यह सब बोलते हैं कि, 'हमें यह मिलना चाहिए, यह मिलना चाहिए।' मगर सब को ऐसा नहीं मिलेगा। क्योंकि सब का शेयर है। कंपनी एक ही है, मगर जिसका जितना शेयर है, उसे उतना ही मिलता है। ऐसे बात समझने की है।

प्रश्नकर्ता : ठीक से समझ में आ गया। अभी सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि हमें ये सब जो परेशानी है, उसे बर्दाश्त करने के वास्ते शक्ति प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह तो हम कर देंगे। ऐसा पाँच हज़ार लोगों को कर दिया है, फिर कभी कोई परेशानी ही न हो, ऐसा।

प्रश्नकर्ता : फिर भी मुझे... बर्दाश्त करने के लिए कोई उपाय है?

दादाश्री : हाँ, उपाय तो बहुत हैं। जितने रोग हैं न, उतने उनके उपाय होते हैं, रेमिडी होती है। रेमिडी के बिना दुनिया है नहीं। वह सब कहते हैं कि हमें यह दु:ख है; यह दु:ख है, तो हमारे पास आ जाते हैं, तो सब का दु:ख निकल जाता है। क्योंकि हम दु:खी कभी नहीं हुए। हमने दु:ख कभी देखा ही नहीं। हम मोक्ष में, निरंतर मुक्त भाव से रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : वह मैंने मान लिया कि मुझे कोई दु:ख नहीं होगा। लेकिन मेरा छ: साल का बच्चा है, वह चल भी नहीं सकता, बोल भी नहीं सकता, बीमार ही रहता है, उसे बहुत परेशानियाँ हैं, अगर मैं अकेला रहूँ और बच्चा अकेला रहे तो मैं एडजस्ट करके चला लूँ। लेकिन बच्चे की माँ को क्यों भुगतना पड़ता है? यह मुझसे देखा नहीं जाता।

दादाश्री : नहीं, वह भी पार्टनर है न? शेयर होल्डर है न? तुम्हारे अकेले का कर्म नहीं, सब शेयर होल्डर हैं। जो ज़्यादा भुगतता है, उसका शेयर ज़्यादा है।

प्रश्नकर्ता : और ऐसा होने से भगवान पर जो फेथ (श्रद्धा) है, विश्वास है, वह भी कम होना शुरू हो जाता है।

दादाश्री : आपको भगवान पर श्रद्धा कम हो जाती है लेकिन भगवान इसमें कुछ करता ही नहीं। उसके ऊपर यह आक्षेप लगाते हैं कि 'भगवान ने हमारे लड़के को दु:ख दिया, ऐसा बना दिया, हमें ऐसा नुकसान किया।' भगवान ऐसा कुछ करता ही नहीं। भगवान तो भगवान ही हैं, संपूर्ण ऐश्वर्य के साथ हैं और आपके अंदर बैठा हुआ है। हम उसे देख सकते हैं।

द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ! गॉड हैज़ नॉट पज़ल्ड दिस वर्ल्ड एट ऑल। इटसेल्फ पज़ल्ड हो गया है और उसमें से पज़ल ही होता है। आपको नहीं, हर एक व्यक्ति को पज़ल ही होता है। जो

'ज्ञानी' हैं, उन्हें पज़ल नहीं होता और हमने जिनको ज्ञान दिया है, उनको पज़ल नहीं होता, क्योंकि वे ज्ञान में ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हमारे जीवन में ऐसा प्रसंग भगवान क्यों लाए? यह हमारी समझ में नहीं आता।

दादाश्री : इस दुनिया में सभी प्रकार के लोग हैं, मगर तुम्हारे राग-द्वेष जहाँ पर हैं, उसके साथ तुम्हारा संबंध होता है। अच्छे व्यक्ति के साथ राग करते हो, तो उसके साथ संबंध होता है और बुरे व्यक्ति के साथ द्वेष करते हो, तो उसके साथ भी संबंध हो जाता है। द्वेष किया तो भी वह आपके यहाँ आएगा और राग किया तो भी वह आपके यहाँ आएगा। उस बच्चे के लिए पूर्व जन्म में आपने क्या किया था? दूसरे सब लोगों से उस बच्चे को परेशानी आ गई, तब आपकी उससे कुछ पहचान नहीं थी, फिर भी वह प्रोटेक्शन के लिए आया तो आपने क्या बोला कि 'हमारी पूरी ज़िंदगी जाएगी फिर भी उसे हम बचाएँगे'। वह हिसाब जॉइन्ट हो गया। दूसरा कुछ नहीं, ऐसे संबंध में आ गए।

प्रश्नकर्ता : यह फर्ज़ जो हम निभाते हैं, उसके लिए सिर्फ शक्ति चाहते हैं, और कुछ नहीं।

दादाश्री : हाँ, सही है, वो शक्ति तो माँगनी ही चाहिए। क्योंकि फर्ज़ निभाना ही चाहिए। अपने इन्डियन (भारतीय) संस्कार हैं, ऐसे छोड़ देने का नहीं। आपने पकड़ लिया, हाथ दिया, फिर छोड़ने का नहीं। स्त्री को डिवॉर्स (तलाक) भी नहीं दे सकते हैं, क्योंकि अपना इन्डियन कल्चर (भारतीय संस्कार) है न?

प्रश्नकर्ता : जब प्रेरणा हो गई आपके पास आने के लिए, तो कोई अच्छी चीज़ होने वाली है।

दादाश्री : हम तो निमित्त हैं, हम किसी चीज़ के कर्ता नहीं हैं। मगर हमारा यह यशनाम कर्म है कि जिसका अच्छा होने का योग

हो तो वह फिर हमारे पास आ जाता है, ऐसा हमारा यश है। हम कुछ करते नहीं, यश ही सब काम करता है।

कुदरत की व्यवस्था का प्रमाण

प्रश्नकर्ता : आज तो दुनिया में हर जीव दु:खी है। हम इससे छुटकारा कैसे पाएँ?

दादाश्री : 'ज्ञानी' मिलें तो दु:ख से छुटकारा हो जाए।

प्रश्नकर्ता : सब को तो ज्ञानी मिल नहीं सकते, तो सब सुखी कैसे हो सकते हैं?

दादाश्री : नहीं, नहीं, सब के लिए सुख नहीं है। यह कलियुग है, दूषमकाल है। भगवान ने कहा था कि दूषमकाल में सुख की इच्छा ही मत करो, उसे माँगो ही मत। ऐसा बोलना कि भगवान, कुछ दु:ख कम करो। सुख तो 'ज्ञानी पुरुष' हो, तो ही सुख हो सकता है। नहीं तो इसमें सुख नहीं है। समकिती व्यक्ति के पास बैठो तो सुख आएगा। मिथ्यात्वी के पास से सुख नहीं आएगा।

प्रश्नकर्ता : फॉरेन में लोग दु:खी हैं, पर उनसे भी ज़्यादा दु:खी यहाँ हैं।

दादाश्री : वह बात ठीक है। यहाँ के लोगों को ज़्यादा चिंता-वरीज़ है, क्योंकि यहाँ विकल्पी लोग हैं और वे लोग सहज हैं। सहज यानी बालक के जैसे और इधर बड़े बुजुर्ग (उम्र वाले) जैसे हैं। बड़ी उम्र वाले को ज़्यादा दु:ख रहता है।

प्रश्नकर्ता : अपने भारत में बहुत से लोगों को खाना भी पूरा नहीं मिलता।

दादाश्री : कौन कहता है कि खाना भी नहीं मिलता? यह सब गलत बात है। खाना न मिलने के कारण कोई व्यक्ति मरा नहीं।

प्रश्नकर्ता : अभी गरीबी है, वह सही है?

दादाश्री : वह गरीबी नहीं है, जो है वह सही है। कुदरत ने बिल्कुल करेक्ट रखा है। कौन गरीब है? आपको गरीबी किसने बताई? गरीब कहाँ देखा आपने? और हमें बताओ कि कौन गरीब नहीं है? इस बड़ौदा शहर में कौन गरीब नहीं है? गरीब की डेफिनेशन ऐसी नहीं है। आप आँख से देखते हैं वह गरीब है, ऐसा मान लिया, यह ठीक नहीं है। अमुक लोंगो को खाने का ही मिलना चाहिए, उनके पास नकद रकम तो होनी ही नहीं चाहिए। यह कुदरत का ही खेल है। कुदरत ने ही ऐसा हिन्दुस्तान के लिए रखा है, बाहर के लिए कुछ भी हो। कुदरत ने जो हिन्दुस्तान के लिए किया है, वह सही है।

'ज्ञानी' मिले तो क्या लोगे?

दादाश्री : किसलिए धंधा करते हो? किसलिए पैसा बचाते हो? वह सब कभी सोचा है?

प्रश्नकर्ता : वह तो ज़िंदगी का एक भाग है।

दादाश्री : हाँ, मगर पैसे बचाकर क्या करने का? वे सब लोग तो चले जाते हैं न? लास्ट स्टेशन जाते हैं न? तो वे साथ में ले जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : यहाँ अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए, शांति से जीने के लिए।

दादाश्री : हाँ, मगर उसका फायदा क्या? पैसा कमाना ज़रूरी है, यह तो हम भी स्वीकार करते हैं मगर किस हेतु के लिए है? खाने-पीने के लिए? शांति के लिए? तो शांति किसलिए? क्या फायदा? कोई बुजुर्ग व्यक्ति को पूछा नहीं?

प्रश्नकर्ता : तो आप बताइए।

दादाश्री : 'ज्ञानी पुरुष' मिलें तो उनके पास अपना 'सेल्फ रियलाइज़ेशन' हो जाए, तो फिर अपने को परमानेन्ट मुक्ति मिल जाती

है। इस संसार से मुक्ति मिल जाती है। और 'ज्ञानी पुरुष' नहीं मिलें तब तक क्या करने का? दूसरे सब लोगों को, कुछ न कुछ सुख देने का। इससे अपने को अगले जन्म में सुख मिलेगा। अच्छा ही काम करने का, तो इससे अपने को अच्छा मिलेगा।

'ज्ञानी पुरुष' मिले तो 'मैं कौन हूँ' यह समझ लेना है। फिर कभी चिंता नहीं होगी। क्रोध-मान-माया-लोभ सब चले जाएँगे और आपको परमानेन्ट शांति रहेगी।

प्रश्नकर्ता : पुण्य क्या चीज़ है?

दादाश्री : आपके पास बैंक में क्रेडिट है, तो आप जब भी चाहें तब पचास रुपये, सौ रुपये किसी को दे सकते हैं और जिसके पास क्रेडिट नहीं है वह क्या करेगा? पुण्य यानी आपकी मर्ज़ी के मुताबिक और पाप यानी आपकी मर्ज़ी के खिलाफ।

वे मज़दूर लोग सारा दिन बहुत मेहनत करते हैं लेकिन उनको ज़्यादा पैसे नहीं मिलते हैं। पैसा मज़दूरी से नहीं मिलता है, वह पुण्य का फल है। पिछले भव में तुमने जो पुण्य किया है, उसके फलस्वरूप यह है। इस संसार में खाना-पीना मिला, पैसा मिला, यह सब पाप और पुण्य का फल है और हमें जाना कहाँ है? मोक्ष में। तो मोक्ष में जाने के लिए पुरुषार्थ होना चाहिए। पैसा आदि सब चीज़ें तो आपको ऐसे ही मिलेंगी। अपने को तो काम करने का है सारा दिन। मगर मोक्ष में जाने के लिए तो बात अलग है।

व्यापार में धर्म रखा?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हमारा धंधा ऐसा है कि उसमें झूठ और छल-कपट करना पड़ता है, हमें वह पसंद नहीं है, फिर भी करना पड़ता है, तो इसके लिए क्या करना चाहिए? धंधा छोड़ देना है?

दादाश्री : धंधा ऐसे ही चालू रखना। अंदर बैठे हैं, वही भगवान सब सुनते हैं। अभी दूसरा बाहर वाला भगवान किसी की सुनता नहीं।

क्योंकि बाहर वाले को तो बहुत फोन आते हैं तो किसी की बात सुनता ही नहीं। इसलिए आप अंदर वाले को फोन करना। उनका नाम क्या है? 'दादा भगवान' है। रोज़ सुबह में पाँच बार बोलना कि, 'हे दादा भगवान, हमें यह ऐसा बुरा धंधा अच्छा नहीं लगता। अभी परेशानी ऐसी आ गई है और समाज भी ऐसा हो गया है मगर हमें बहुत बुरा लगता है। हम इसके लिए माफी माँगते हैं, फिर ऐसा कभी नहीं करेंगे।' इतना बोलने से कोई अड़चन नहीं आएगी। धंधे में तो तुम्हारे सब प्रतिस्पर्धी हैं, उन हरीफ़ के साथ चलना ही पड़ता है न? मगर ऐसे रोज़ माफी माँगना। तो तुम्हारी जोखिमदारी नहीं। बाद में तीन-चार साल में तुम्हारे हाथ से धंधे में बिल्कुल कपट नहीं होगा।

व्यापार तो ऐसी चीज़ है कि दो साल अच्छे भी जातें हैं और दो साल बुरे भी जाते हैं। व्यापार के दो ही किनारे हैं, मुनाफा और घाटा। एलिवेट भी होता है और कभी डिप्रेस भी होता है। मगर खुद को रियलाइज़ हो गया तो अंदर शांति हो जाएगी। वह शांति बढ़ती-बढ़ती फिर बिल्कुल समाधि ही रहेगी, सदा के लिए। फिर डिप्रेस नहीं होगा।

अपनी सेफसाइड के लिए धर्म समझना चाहिए। दुनिया में दो चीज़ें काम करती हैं, पाप और पुण्य। जब पुण्य प्रकट होता है तो अच्छी जगह मिलती है, सब जगह में अच्छा खाना-पीना मिलता है, सब संयोग अच्छे अच्छे मिलते हैं। जब पाप प्रकट होता है, तो सब संयोग बुरे हो जाते हैं। उस समय क्या करने का? सेफसाइड कैसे रहेगी? ऐसी सेफसाइड के लिए धर्म समझना चाहिए।

अन्डरहैन्ड के अन्डरहैन्ड बन सकोगे?

धर्म क्या है? वह रिलेटिव है। वह भौतिक सुख के लिए है। इससे व्यक्ति आगे जाता (बढ़ता) है, मगर यही पूरी सच्ची बात नहीं है। सच्ची बात तो यही है कि जागृति पूरी होनी चाहिए। जागृतिपूर्वक आगे जाना चाहिए। जागृति के लिए ही हिन्दुस्तान में मनुष्य का जन्म

है। यह तो, लोग नींद में रहते हैं और हर रोज़ स्त्री के साथ झगड़ते हैं, बॉस के साथ झगड़ते हैं, अन्डरहैन्ड के साथ झगड़ते हैं। आप कभी अन्डरहैन्ड के साथ झगड़ते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होता है कभी।

दादाश्री : जो अपना अन्डरहैन्ड है, उसकी तो रक्षा करनी चाहिए। जिसकी रक्षा करने की है, उसके साथ ही लड़ते हैं, तो उसे जागृत कैसे बोला जाएगा?

प्रश्नकर्ता : वह तो नींद में है, उसको जागृत करने के लिए हम लड़ते हैं।

दादाश्री : अरे, उसके साथ लड़ते हैं, वही अजागृति है। वह तो अपनी निर्बलता है। जो छोटे व्यक्ति को दंड देता है, अपने अन्डरहैन्ड को दंड देता है, वह तो उसकी निर्बलता है। बॉस को क्यों दंड नहीं देते हो? बॉस जब भी बोलते हैं, तब सुन लेते हो। यह क्या तरीका है? बॉस को भी दंड दो, उसे भी जागृत करो न! उसे बोलो कि 'तुम तुम्हारी स्त्री के साथ लड़कर आए हो और इधर गुस्से में हमें क्यों सताते हो?!' ऐसा स्पष्ट बोलो!! लेकिन अन्डरहैन्ड को ही सब सताते हैं, यह जागृत की निशानी नहीं और इसमें सारा दिन बंधन ही हो रहा है, यह भी मालूम नहीं है। इसमें फिर व्यक्ति जानवर में जाएगा, यह भी मालूम नहीं उसे। क्योंकि वह पशु होने का कॉज़ चार्ज करता है, तो इफेक्ट पशु का हो जाएगा। कॉज़ मनुष्य का करे तो मनुष्य होता है, देव का कॉज़ करे तो देवलोक में जाता है, नर्क का कॉज़ करे तो नर्कगति में जाता है। जैसा कॉज़ करता है, वैसा इफेक्ट होता है। आपने कभी पाशवता का कॉज़ किया था? अपने अन्डरहैन्ड को जो बोलता है और उसके साथ गुस्सा करता है, वह बिल्कुल पाशवता है। अन्डरहैन्ड की तो रक्षा करनी चाहिए। वह हमें बड़ा मानता है, वह हम से तो बेचारा छोटा है, इसलिए उसकी रक्षा करनी चाहिए।

आपका बॉस है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बॉस है न।

दादाश्री : कभी गुस्सा करता है? बॉस का उसकी स्त्री के साथ कभी झगड़ा हो गया तो इधर ऑफिस में आकर उसका क्रोध हम पर निकालता है। देखो, ऐसी बात है। तो हम आपको ऐसी प्रोटेक्शन दे देंगे कि आपको कुछ दु:ख होगा ही नहीं। फिर ऑफिस में बैठकर भी समाधि रहेगी, बॉस गाली दे तो भी समाधि नहीं जाएगी। यह ज्ञान मिल जाएगा तो फिर तुम्हारा कोई बॉस ही नहीं रहेगा। वह 'रवीन्द्र' का बॉस रहेगा, तुम्हारा खुद का बॉस नहीं। तुम 'खुद' और 'रवीन्द्र' दोनों अलग हो जाओगे और अलग ही काम चलेगा सब। फिर स्त्री के साथ रह सकते हो, लडके की शादी भी करा सकते हो और सिनेमा देखने को भी जा सकते हो। व्यवहार सबकुछ कर सकते हो। कुछ भी त्याग करने की ज़रूरत नहीं। इधर त्याग तो अहंकार और ममत्व का हो जाता है, फिर त्याग करने की कोई ज़रूरत ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहकर भी अलिप्त रहना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, ऐसा अलिप्त हो जाता है।

हिन्दुस्तान में लोगों को सच्चा मार्ग नहीं मिला। इसलिए सब मोह में डूब गए। इधर मार्ग नहीं मिलने से लोग उधर चले जाते हैं। सच्चा मार्ग मिले तो हिन्दुस्तान के लोग एक घंटे में भगवान बन सकते हैं। भगवान किसको बोला जाता है? व्यक्ति धंधे वाला हो या कुछ भी करता हो, मगर जिस व्यक्ति को 'कुढ़न-बेचैनी' नहीं होती, उसे भगवान बोला जाता है। '*कढ़ापा*-बेचैनी' (कुढ़न-बेचैनी) तुम्हारी समझ में आता है? 'कुढ़न-बेचैनी' यानी आपको मैं समझाता हूँ।

तुम्हारे यहाँ कोई मेहमान बैठे हैं और नौकर चाय के दस कप ट्रे में लेकर आया और कहीं टक्कर लगी, तो उसके हाथ में से ट्रे गिर गई तो आपको अंदर कुछ होता है?

प्रश्नकर्ता : मेरी चीज़ है तो इफेक्ट होता है। पड़ोसी की होगी तो मुझे कुछ नहीं होगा।

दादाश्री : आपकी चीज़ हो और आप विचारशील हों, तो आप मुंह से कुछ नहीं बोलेंगे, क्योंकि आप सोचते हैं कि सब लोगों के सामने मैं नौकर के साथ लड़ूँगा तो सब के सामने मेरी इज़्ज़त चली जाएगी। इसलिए मुंह से कुछ नहीं बोलते, मगर अंदर बोलते हैं कि सब लोग जाएँगे फिर नौकर को मारूँगा। मन में जो इफेक्ट होता है, उसको 'बेचैनी' बोला जाता है और मुंह से लड़ने लगा तो उसे 'कुढ़न' बोला जाता है। किसी को दु:ख हो ऐसी स्पीच नहीं होनी चाहिए।

वर्तमान में रहोगे कैसे?

गोवा से खंभात आए तो थकान नहीं लगी? टायर्ड नहीं हो गए?

प्रश्नकर्ता : नहीं, आपके पास आने पर सारी थकान चली गई।

दादाश्री : हाँ, मगर थकान लगी थी न? क्योंकि आप क्या बोलते हैं कि मैं गोवा से खंभात आया। सच में तो गाड़ी इधर आई है, मगर आप बोलते हैं कि मैं आया। लेकिन आप तो गाड़ी में सीट पर बैठे थे। आपकी समझ में ऐसा आए कि मैं नहीं आया, मुझे गाड़ी लेकर आई। फिर साइकोलॉजिकल इफेक्ट ऐसा हो जाएगा, तो थकान नहीं लगेगी।

हम बम्बई से गाड़ी में बैठते हैं और गाड़ी बड़ौदा आती है, तो हम देखते हैं कि सब लोग ऐसा बोलते हैं कि 'बड़ौदा आया, बड़ौदा आया'। तो हम उतर जाते हैं, बस। बम्बई से हम नहीं आए, यह गाड़ी ले आई। और जो बम्बई से आया वह घर पहुँचते ही क्या कहता है कि 'अरे, अभी चाय रख दे, जल्दी चाय रख दे, मैं थक गया हूँ।' अरे, तू तो गाड़ी में बैठकर आया था, तो फिर कैसे बोल सकता है कि मैं थक गया?

प्रश्नकर्ता : दिस इज़ रियल साइन्स!

दादाश्री : हाँ, मैं तो ऐसे ही करता हूँ। हमें जब 'ज्ञान' नहीं हुआ था, तब हम बम्बई से बड़ौदा आते थे, तो सब लोग हमें स्टेशन पर छोड़ने आते थे। गाड़ी रवाना हुई तो सब लोग चले जाते थे, तो 'मैं' इस 'ए.एम.पटेल' को क्या कहता था कि कॉन्ट्रैक्टर साब, बम्बई छूट गया और अभी बड़ौदा नहीं आया। गाड़ी ने व्हिसल मार दी तो बम्बई बिल्कुल छूट गया, बड़ौदा अभी नहीं आया तो हम अभी मोक्ष में ही हैं। बम्बई से छूट गया, बड़ौदा से बंधन नहीं हुआ, तो अभी मुक्त हो गए, मोक्ष में ही हैं। देखो न, सोते-सोते मोक्ष में रहने का!

अंतर-सुख - बाह्य-सुख का बैलेन्स

भौतिक सुख तो सब अपने हिसाब का लेकर आए हैं, वही भुगतने का है। मगर आंतरिक सुख की ज़रा भी कमी पड़े तो आनंद नहीं आता। भौतिक सुख के साथ अंतर-सुख भी होना चाहिए।

भगवान ने क्या कहा था कि अंतर-सुख और बाह्य-सुख, दोनों सुख साथ होने चाहिए। उसमें अगर भौतिक सुख ज़्यादा बढ़ गया तो आंतरिक सुख कम हो जाएगा। आंतरिक सुख कम हो गया तो व्यक्ति के दिमाग़ की खराबी हो जाएगी। यह भौतिक सुख थोड़ा कम हो तो चलेगा मगर आंतरिक सुख तो होना ही चाहिए। आंतरिक सुख होगा तो ही भौतिक सुख का मज़ा आएगा। आंतरिक सुख नहीं होगा तो भौतिक सुख 'पॉइज़न' जैसा हो जाएगा। भौतिक सुख ज़्यादा बढ़ गया तो फिर बाद में ब्रांडी है, जुआ है, ऐसे दुराचार में चला जाएगा। नहीं तो मनुष्य को अंतर सुख तो बहुत है, बाहर के किसी भी सुख की ज़रूरत ही नहीं रहे, इतना अंतर में सुख है। 'नेसेसिटी' की इच्छा भी करने जैसी नहीं है। वह अंतर-सुख यदि मिल गया, तो काम हो गया।

अभी जो लोग आंतरिक सुख के लिए खुद ही प्रयत्न करते हैं, वह कैसी बात है कि डॉक्टरी की पुस्तक में देखकर खुद ही प्रिस्क्रीप्शन बना लें तो चलेगा? उससे पूरा फायदा नहीं मिलता। मगर डॉक्टर के

पास जाएँ तो फिर पूरा फायदा है। वह डॉक्टर कैसा होना चाहिए कि बगैर फी का होना चाहिए। जहाँ फी है, वहाँ सच्ची दवा नहीं है। जहाँ फी नहीं होती, वहाँ सच्ची दवा है।

प्रश्नकर्ता : फॉरेन कन्ट्रीज़ में बहुत से लोग दारू, चरस, गांजा लेते हैं आनंद के लिए, मौज करने के लिए और कहते हैं कि दूसरी दुनिया में जा सकते हैं। तो यह दूसरी दुनिया क्या है? वह जानना है।

दादाश्री : दूसरी दुनिया जैसी कोई चीज़ ही नहीं है। वह जो नशा करते हैं, उससे अंदर जो संवेदन होता है, वह बिल्कुल डार्कनेस हो जाता है। उसमें उसे आनंद दिखता है। उसे वह सेकन्ड वर्ल्ड (दूसरी दुनिया) का आनंद कहता है।

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता है कि सेकन्ड वर्ल्ड जैसा कुछ होना चाहिए, क्योंकि पाँच-छः महीने का छोटा बच्चा होता है, वह रोता है, हँसता है, उसे फीलिंग्स हैं, वह सेकन्ड वर्ल्ड को देखकर ही होनी चाहिए या मनुष्य मृत्यु के बाद सेकन्ड वर्ल्ड में जाता होगा ऐसा लगता है।

दादाश्री : सेकन्ड वर्ल्ड जैसी कोई चीज़ ही नहीं। हम ज्ञान में सब देखकर बोलते हैं। यह वर्ल्ड क्या है, उसका क्रिएटर कौन है, किसने यह सब बनाया, किस तरह से यह चलता है, ये सबकुछ हम देखकर बोलते हैं। किसी किताब में पढ़कर नहीं बोलते हैं। आपको वह सेकन्ड वर्ल्ड देखने में इन्टरेस्ट है और आपकी बिलीफ में यह फर्स्ट वर्ल्ड है, मगर ऐसा नहीं है।

फुल डार्कनेस में क्या होता है? गांजा-चरस जैसी कोई भी चीज़ से वह फुल डार्कनेस में चला जाता है, वहाँ बिल्कुल इफेक्ट नहीं होता, अंदर कोई इफेक्ट नहीं होता है। वह जो दूसरी दुनिया की आपकी बिलीफ है, वह वर्ल्ड ऑफ डार्कनेस है। वह गांजा-चरस पीकर ये दूसरी दुनिया में चला जाता है। व्यक्ति को इतना थोड़ा भी उजाला दिखाया कि अंदर बेचैनी चालू हो जाती है, क्योंकि लाइट

इफेक्टिव है न? लाइट इज़ इफेक्टिव। जब फुल लाइट हो जाती है तो अनइफेक्टिव हो जाता है और फुल डार्कनेस हो गई तो अनइफेक्टिव हो जाता है। फिर फुल डार्कनेस में दु:ख मालूम नहीं होता है, उसी को ही वह आनंद मानता है।

सारी दुनिया में हम अकेले व्यक्ति अबुध हैं। हमारे पास बुद्धि नहीं है। हमारे पास इनडाइरेक्ट लाइट नहीं है। हमारे पास डायरेक्ट लाइट है, फुल लाइट है, तब फुल समाधि हो जाती है। बुद्धि से समाधि नहीं रहती है। तो वह ब्रांडी, गांजा कुछ पीता है तो भी वह अबुध हो जाता है, तब भी समाधि होती है। मगर वह डार्कनेस की समाधि है। बुद्धि की लाइट व्यक्ति को इमोशनल करती है। तो बात समझ गए न? लाइट इज़ इफेक्टिव! फुल लाइट इज़ अनइफेक्टिव और फुल डार्कनेस इज़ अनइफेक्टिव।

'ज्ञानी पुरुष' के पास सब बातें साइन्टिफिक होती हैं। हम मोटर में भी घूमते हैं फिर भी निरंतर समाधि में रहते हैं। हम बिल्कुल फुल लाइट की दुनिया में ही रहते हैं। वह चरस-गांजा पीकर फुल डार्कनेस की दुनिया में चला जाता है। दूसरी दुनिया एन्ड वाली है और सच्ची दुनिया है, वह एन्डलेस है।

प्रश्नकर्ता : जिसकी ज़रूरत है, वह चीज़ क्यों नहीं मिलती?

दादाश्री : आप अगर नॉर्मेलिटी में रहें तो जिस चीज़ की आपको ज़रूरत है वो चीज़ घंटे, दो घंटे, तीन घंटे में आप जहाँ बैठे हैं, वहाँ हाज़िर हो जाएगी। भगवान अंदर बैठे हैं। मगर मनुष्य नॉर्मेलिटी में नहीं रहता। लोग लोभ करने को गए, अबव नॉर्मल लोभ करने को गए, उसे भगवान क्या कहते हैं, 'अब हमारी शक्ति तुम्हें नहीं मिलेगी। अब अपनी शक्ति से जाओ, खुद की ज़िम्मेदारी पर जाओ। हम आपको लाइट देंगे।' लाइट के बिना चलता ही नहीं न?! भगवान लाइट देने को तैयार हैं मगर ज़िम्मेदारी नहीं लेते। खुद की शक्ति से जाओ। भगवान को आप प्रार्थना करेंगे कि, 'हे भगवान! हमें हेल्प

करो', तो भगवान आपको ज़रूर हेल्प करते हैं। वे प्रकाश ही देने का काम करते हैं, दूसरा कुछ नहीं।

मनुष्य चिंता मुक्त हो सकता है?

दादाश्री : कभी चिंता होती है क्या?

प्रश्नकर्ता : होती है।

दादाश्री : तो क्या मेडिसिन (दवाई) ली आपने?

प्रश्नकर्ता : चिंता की तो मेडिसिन ही नहीं है।

दादाश्री : मगर मेन्टल वरीज़ तो उस डॉक्टर को भी रहती है न? सब को ही मेन्टल वरीज़ रहती है। हमें मेन्टल वरीज़ कभी नहीं होती है। आपको वरीज़ निकालने की है? कभी वरीज़ न हो ऐसा करने का है?

आप रात को नींद में किधर चले जाते हैं?

प्रश्नकर्ता : वह नहीं मालूम।

दादाश्री : अगर नींद चली ना जाए, नींद परमानेन्ट हो जाए तो आपकी क्या स्थिति हो जाएगी?

प्रश्नकर्ता : तो दूसरे लोग उसे डेड (मृत्यु) कहेंगे।

दादाश्री : सोते समय कभी चिंता होती है कि सवेरे नहीं उठ सका तो मैं क्या करूँगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उसकी चिंता तो नहीं रहती।

दादाश्री : अगर इतनी चिंता हो जाए तो कल्याण हो जाए!

प्रश्नकर्ता : परमात्मा के साक्षात्कार के लिए क्या विधि है?

दादाश्री : क्या नाम है आपका?

प्रश्नकर्ता : रवीन्द्र।

दादाश्री : क्या आप रियली स्पीकिंग रवीन्द्र हैं? सचमुच आप कौन हैं? रवीन्द्र तो आपका नाम है, पहचान करने के लिए। आप खुद कौन हैं?

प्रश्नकर्ता : वह तो जैसे सब आत्मा है, वैसे मैं भी एक आत्मा हूँ।

दादाश्री : हाँ, उस आत्मा की पहचान होनी चाहिए। आत्मा की पहचान हो गई, फिर रवीन्द्र तो टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट है। वह पहचान हम करा देते हैं। फिर परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है। फिर कभी चिंता-वरीज़ कुछ नहीं होती है और एक-दो जन्म के बाद मोक्ष में चला जाता है।

इस दफा बोम्बे में जन्म लिया है, तो उसके पहले किधर जन्म लिया था? मालूम नहीं? और अगले जन्म में किधर जन्म लोगे यह भी मालूम नहीं। और अभी किधर जाने का है यह भी मालूम नहीं। ऐसा कैसे चलेगा?

कभी चिंता होती है? दवाई नहीं करते हैं? बिना दवाई ऐसे ही आराम हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : आराम है ही कहाँ?

दादाश्री : किसी जगह पर आराम नहीं है? वह आराम हराम हो गया है? एक दिन भी चिंता बंद नहीं होती? दिवाली के दिन तो बंद रहती है कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : दिवाली में तो चिंता बढ़ती है।

दादाश्री : दिवाली के दिन चिंता ज़्यादा बढ़ती है? उस दिन तो खाना-पीना अच्छा मिलता है, कपड़े अच्छे मिलते हैं, फिर भी?

प्रश्नकर्ता : खाने-पीने के लिए तो हम महसूस ही नहीं करते।

दादाश्री : हाँ, मगर वह चिंता तो बढ़ती है। ऐसा कब तक

चलेगा? कितना स्टॉक है? अभी खत्म नहीं हुआ?! सारे दिन में चिंता नहीं हो, ऐसा एक दिन भी मिले तो कितना आनंद हो जाता है न! लेकिन एक दिन भी ऐसा नहीं मिलता है। तुम्हारे यहाँ सभी लोगों को ऐसा रहता है?

प्रश्नकर्ता : सब का क्या पता?

दादाश्री : कितने लोग आनंद में रहते हैं, उसकी तलाश नहीं की? आप अकेले को ही नहीं, सारी दुनिया में सभी लोगों को चिंता है। सभी लोगों को आधि-व्याधि-*उपाधि,* वरीज़!! और पूछेंगे कि 'क्यों भाई, कैसा है?' तब वह कहता है कि, 'बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है।' मगर यह सब झूठी बातें हैं। ऐसा नहीं बोले, तो उसकी आबरू चली जाए। इसलिए आबरू रखने के लिए ऐसा बोलते हैं कि, कुछ परेशानी नहीं और खुद जानते हैं कि कितनी परेशानियाँ हैं। परेशानी कोई बता देता है? परेशानी गुप्त ही रखते हैं, वह भगवान ने 'कीमिया' कैसा अच्छा किया है(!) कि कोई परेशानी ही नहीं बताए। और स्त्री के साथ घर में झगड़ा होता है, तो वह थोड़े रोकर बाहर निकलता है? तब तो मुंह धोकर बाहर निकलता है। ऐसे दुनिया चल रही है।

ऐसा है, सच्ची बात जानने की है। वह सच्ची बात जानने को नहीं मिली लोगों को और जो लौकिक बात है वही बात सब लोग जानते हैं। अलौकिक बात क्या चीज़ है, कभी सुनी भी नहीं, पढ़ी भी नहीं और हमने बताया ऐसे जानी भी नहीं। अलौकिक बात जाने तो सब परेशानियाँ चली जाती हैं। इधर अलौकिक बात जानने को मिलती है। सेल्फ का रियलाइज़ेशन हो सकता है, फिर चिंता कभी नहीं होती और बिज़नेस भी आप कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : मानो या न मानो, मगर सब को वरीज़ तो रहती ही है।

दादाश्री : क्यों रहती है? आपने खुद को पहचाना नहीं और

आप बोलते हैं, 'मैं रवीन्द्र हूँ', ऐसा इगोइज़म (अहंकार) करते हैं। 'ये सब मैं चलाता हूँ', ऐसा भी इगोइज़म करते हैं। और इससे वरीज़ ही रहती है। जो इगोइज़म नहीं करता, उसे कुछ वरीज़ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : जिसे चिंता नहीं होती, वो तो भगवान ही बन गया।

दादाश्री : हमारे साथ वाले जो लोग हैं, उनको कभी एक भी चिंता ही नहीं होती। वरीज़ है नहीं बिल्कुल। और जेब काट ले तो भी चिंता नहीं। यह बात मानने में आती है? क्या इस वर्ल्ड में बिना वरीज़ कोई व्यक्ति कभी होता है? कभी चिंता नहीं हो ऐसा ज्ञान है, ऐसी अपनी इन्डियन फिलॉसोफी है। जेब काट ले तो भी कुछ होता नहीं, गाली दे गया तो भी कुछ होता नहीं, नो डिप्रेशन, फूल चढ़ाए तो एलिवेशन नहीं, ऐसा अनइफेक्टिव हो जाता है (ज्ञान से)।

प्रश्नकर्ता : यह स्टेज कब आती है?

दादाश्री : वो स्टेज हम सिर पर हाथ रखकर कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : चिंता का कारण क्या है?

दादाश्री : चिंता का कारण इगोइज़म है। अपनी बिलीफ में ऐसा है कि 'मैं ही चलाता हूँ', ऐसा इगोइज़म है, इससे चिंता होती है। कौन चलाता है, वह मालूम हो जाए तो इसकी वरीज़ नहीं होगी। लेकिन सच मालूम होना चाहिए। लेकिन वह तो शंका है। इसलिए घड़ी में कहता है, भगवान चलाते हैं। फिर थोड़ी देर में कहता है, 'मैं चलाता हूँ'। फिर कहता है, 'मी काय करूँ (मैं क्या करूँ)।' इसको शंका है। इस वर्ल्ड को भगवान चलाते ही नहीं और आप भी चलाते नहीं हैं। भगवान तो कुछ कर सकते ही नहीं। वो दूसरी शक्ति है, वही सब चलाती है। ये बात नहीं जानते इसलिए मन में ऐसा होता है कि मैं ही चलाता हूँ और इससे वरीज़ होती है, चिंता हो जाती है। चिंता इगोइज़म है एक प्रकार का।

चिंता किसलिए करते हो? कोई भी जानवर चिंता नहीं करता,

तुम क्यों चिंता करते हो? सब को जो ज़रूरी चीज़ें हैं, वे मिल जाती हैं और आपको भी मिल जाती हैं। फिर ज़्यादा मिले ऐसी आशा रखते हो, वह गलत है। स्वार्थ के लिए बहुत आशा रखते हो, वही दु:ख है। नहीं तो देह के लिए सब चीज़ें ऐसे ही मिल जाती हैं।

दो मिल वाला सेठ होता है, तो उसे एक पल भी शांति नहीं रहती। वह तीसरी मिल बनाने के लिए तैयारी करता है। उसे खाने के लिए भी टाइम नहीं। एक सेठ ने तीसरी मिल बनाई थी, डिनर के लिए हमें बुलाया था। हम साथ में खाने बैठे थे और उनकी वाइफ सामने आकर बैठी। तो सेठ ने बोला कि 'क्यों इधर आई?' तो वो बोली कि 'आज आप ज्ञानी पुरुष के साथ बैठे हैं, तो आज तो आराम से खाना खाइए।' तो मैं समझ गया कि आराम से कभी वह खाता नहीं। फिर सेठानी हमें बोली कि 'हम खाना टेबल पर रख देते हैं, पर रखने के पहले ही सेठ मिल में पहुँच जाते हैं और फिर बॉडी (शरीर) ही इधर खाती है।' फिर मैंने बोल दिया कि, 'सेठ, आप खाना खाने के टाइम चित्त को एब्सेन्ट (गैरहाज़िर) मत रखो। चित्त को प्रेज़न्ट (हाज़िर) रखें। नहीं तो आपको ब्लड प्रेशर हो जाएगा और हार्ट अटैक भी हो जाएगा!! कैसी ज़िम्मेदारी आप लेते हैं? किसके लिए यह करते हैं? कितना लोभ है आपको? आप आराम से खाएँ।'

कृष्ण भगवान क्या कहते हैं कि प्राप्त को भुगतो, अप्राप्त की चिंता मत करो। अपने पास है वह आराम से खाओ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चिंता-वरीज़ ये सब क्या है?

दादाश्री : चिंता-वरीज़ वे सब इगोइज़म है।

प्रश्नकर्ता : तो व्हाट इज़ इगोइज़म?

दादाश्री : आप जो हैं, वह जानते नहीं और आप नहीं हैं, वह नाम दिया है, तो वह मान लिया कि मैं रवीन्द्र हूँ, वह रोंग बिलीफ हो गई, वही इगोइज़म है। 'मैं रवीन्द्र हूँ' ऐसा व्यवहार में तो बोलना

चाहिए। मगर व्यवहार में तो ओन्ली ड्रामेटिक होना चाहिए और आप तो रियली बोलते हैं। रिलेटिवली बोलना चाहिए। 'मैं रवीन्द्र हूँ' यह बोलना तो चाहिए मगर ऐसी बिलीफ नहीं होनी चाहिए। ऐसी तुम्हारी बिलीफ हो गई है, वही भूल है। दूसरी कोई भूल नहीं है। वही इगोइज़म है। 'मैं इसका फादर (पिता) हूँ', यह दूसरी रोंग बिलीफ है। 'मैं इसका हज़बेन्ड (पति) हूँ', यह तीसरी रोंग बिलीफ है। ऐसी कितनी रोंग बिलीफ हैं?

प्रश्नकर्ता : सो आइ एम नथिंग?

दादाश्री : नहीं, राइट बिलीफ है न! हम ये सब रोंग बिलीफ फ्रेक्चर कर देते हैं और राइट बिलीफ दे देते हैं।

क्या आप शंकर के भक्त हैं?

दादाश्री : चिंता-वरीज़ होती है, तो क्या दवाई ले आते हैं?

प्रश्नकर्ता : भगवान को याद करते हैं।

दादाश्री : कौन से भगवान?

प्रश्नकर्ता : कोई भी दिल में आया, उनका नाम लेते हैं। कभी शंकर बोलते हैं, कभी विष्णु।

दादाश्री : भगवान तो एक ही तय करना चाहिए। सब भगवान को रखेंगे तो कौन तुम्हारा काम करेगा? आप एक भगवान को तय कर लें।

प्रश्नकर्ता : तो फिर शंकर भगवान।

दादाश्री : हाँ, तो विष पिया था कभी तुमने? वे शंकर भगवान तो ज़हर पीकर शंकर हो गए। तो आपको भी कुछ पीना चाहिए न? तो फिर आप भी शंकर हो जाएँगे। हमने ज़हर पिया, तो हम शंकर बन गए।

कभी तुम्हारी स्त्री तुम्हें ज़हर नहीं देती? तुम्हें ऐसा नहीं कहती

कि, 'तुम्हारे में अक्ल नहीं है। तुम मूर्ख व्यक्ति हो, तुम अच्छे व्यक्ति नहीं हो' ऐसा-तैसा?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी ऐसा कहती है।

दादाश्री : वह राज़ी खुशी से पी लेना, वही ज़हर है। ऐसा ज़हर पी लेने का, तो आप भी शंकर हो जाएँगे। शंकर को कभी खुश करना हो तो अगर तुम्हें कोई गाली दे दे, तो उसका प्रतिकार नहीं करने का। उसको निगल जाने का। कोई कैसा भी ज़हर दे तो पी जाने का। तुम्हें कोई ज़हर का ग्लास देता है?

प्रश्नकर्ता : मतलब किसी न किसी तरह का दु:ख तो जीवन में होता रहता है।

दादाश्री : हाँ, तो जैसे कोल्ड ड्रिंक पी जाते हैं, वैसे यह ज़हर आराम से पी सकते हो? वह आराम से पी लेने का। उसके लिए खराब ध्यान भी नहीं करना चाहिए, प्रतिकार भी नहीं करना चाहिए और इसको कोल्ड ड्रिंक की तरह पी लेने का। तो फिर इससे शंकर हो जाओगे। इट इज़ ऑल्सो अ कोल्ड ड्रिंक टु बी अ शंकर! धीरे-धीरे जैसे कोल्ड ड्रिंक पीते हैं ऐसे आराम से पीने का। एकदम पीएगा तो आपको उसके प्रति रुचि नहीं है, उसका भय लगता है, ऐसा मालूम होगा।

प्रश्नकर्ता : लोग कहते हैं कि शंकर भगवान की जटा है और उसमें से गंगा बहती है। लोग ये विश्वास करते हैं, मगर किसी ने देखा तो नहीं है।

दादाश्री : वह तो अवलंबन है। वे सब प्राकृतिक गुण हैं। वह हेल्प करता है। शंकर के स्वरूप को समझने की ज़रूरत है। जो लिंग है न, उसके दर्शन करते हैं। वह लिंग शंकर का स्वरूप नहीं है, शंकर का स्वरूप तो कल्याण स्वरूप है और मोक्ष स्वरूप है। ऐसे शंकर के दर्शन हो जाएँ तो काम हो जाता है। शंकर के दर्शन करने की सब

को इच्छा होती है, किन्तु बात समझ में नहीं आती। हम शंकर के दर्शन करा देते हैं।

कोई शंकर की भक्ति करे, कोई माताजी की भक्ति करे, यह सब लोक व्यवहार है। बचपन में जो संजोग मिलते हैं, उसके अनुसार व्यवहार करता है और उससे संसार चलता है और अपना मन भी ठीक रहता है। मोक्ष में जाने के लिए तो अंदर बैठे हैं, वही भगवान को पहचानना होगा। अंदर जो हैं वही सब से बड़े महादेव हैं। अंदर वाले महादेव जी की कभी भक्ति की थी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो बाहर वाले महादेव जी की ही भक्ति की है?

प्रश्नकर्ता : सब बाहर वाले ही तो दिखाते हैं।

दादाश्री : मगर अंदर का जो हैं न, वही सच्ची बात है। इससे बड़ा देव कोई नहीं है। जब तक इसकी पहचान न हो, तब तक दूसरे देव की भक्ति करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : पहले बाहर का ही कुछ होगा तो अंदर जाएगा न?

दादाश्री : मगर अंदर का यदि साक्षात्कार हो गया तो काम पूरा हो जाता है। बाहर वाले की भक्ति तो बहुत दिन से करते हो, कितने जन्म से करते हो, फिर भी पूरी नहीं होगी। वह तो जन्मोंजन्म चालू ही रहेगी। कितने जन्मों से बाहर का ही करते हो लेकिन अंदर वाले की पहचान कभी नहीं हुई।

प्रश्नकर्ता : वह अंदर वाले की पहचान कैसे हो?

दादाश्री : वह 'ज्ञानी पुरुष' करा सकते हैं। कृपा से सबकुछ होता है, फिर साक्षात्कार हो जाता है और वह कभी जाता नहीं है, फिर दिन-रात, पल-पल उसकी ही भक्ति होती है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी की पहचान कैसे हो कि ये 'ज्ञानी' हैं?

दादाश्री : वह हमें ऐसा साक्षात्कार कराएँ और वह साक्षात्कार सफल हो जाएँ तो हमें समझ जाने का कि ये 'ज्ञानी' हैं। सफल नहीं हुआ तो अज्ञानी है ऐसा समझ जाने का। दूसरी क्या परीक्षा करने की? साक्षात्कार तो होना चाहिए न? उधार नहीं चाहिए। नकद ही चाहिए।

माँ-बाप की ज़िम्मेदारी कितनी?

प्रश्नकर्ता : अपना बच्चा हो, तो बाप को अपनी ड्यूटी समझकर उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

दादाश्री : पहले तो आप फादर कैसे हो गए? क्या सच्चे फादर हो गए? सर्टिफाइड फादर हैं आप?

फादर कैसे होने चाहिए? सर्टिफाइड फादर होने चाहिए और मदर भी सर्टिफाइड होनी चाहिए। यह तो, विदाउट एनी सर्टिफिकेट, फादर-मदर हो गए। यदि बच्चे ने कुछ छोटी सी गलती की, तो उसको मार मारेंगे। अरे, फादर-मदर कैसे हो गए? जबकि आपके पास कोई भी सर्टिफिकेट नहीं है?!

फादर-मदर की ज़िम्मेदारी कितनी है? कि जैसे यह प्राइम मिनिस्टर साहब हैं, उन पर सारे हिन्दुस्तान की ज़िम्मेदारी है, वैसे आप पर चार लड़कों की ज़िम्मेदारी है। वह ज़िम्मेदारी तो समझते नहीं और फादर हो गए हैं और बोलते हैं, हम लड़के के फादर हैं!

एक लड़के का फादर था। वह लड़के की मदर को कहता था कि, 'देख, देख, देख। अरे, किधर गई, इधर आ। देख, यह अपना लड़का क्या कर रहा है! पाँव ऊँचा करके मेरी जेब में से दो आने निकाल लिए। कितना होशियार हो गया है।' और फिर मदर आई और यह देखकर खुश हो जाती है कि अपना बेटा कितना होशियार हो गया है। ऐसा कौन बोलते हैं? लड़के के फादर-मदर बोलते हैं। वह बेटा समझता है कि ओ हो हो! मैंने आज बहुत बड़ा काम किया। यह तो बेटे को चोर बना रहे हैं!! माँ-बाप की ज़िम्मेदारी

का कुछ भान ही नहीं है और माँ-बाप बन बैठे हैं। रिस्पोन्सिविलिटी है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ। तो फिर सर्टिफाइड फादर-मदर यानी क्या?

दादाश्री : सर्टिफाइड यानी संस्कारी होने चाहिए। संस्कारी नहीं हैं, तो पहले संस्कार सीखने चाहिए। जहाँ संस्कारी पुरुष रहते हैं, वहाँ जाकर संस्कार समझ लेने चाहिए, कि बच्चों के साथ कैसा बरताव रखना, वाइफ के साथ कैसा बरताव रखना चाहिए। वो सब समझ लेना चाहिए। अभी तो अपने यहाँ संस्कार का कोई कॉलेज भी नहीं है न!!!

व्यवहार निःशेष का इक्वेशन

आप लोग फादर को क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : डैडी।

दादाश्री : और वह डैडी अपने लड़के को क्या कहता है?

प्रश्नकर्ता : बेटा।

दादाश्री : बेटा? हाँ, तो वो बेटा बड़ा हो तो डैडी उसे क्या कहते हैं? बेटा? और चालीस साल का हो जाए तो क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : बेटा ही बोलते हैं।

दादाश्री : वह बेटा हर रोज़ डैडी को 'डैडी, डैडी' करके खुश करता है। एक दिन बेटा गुस्से में आ गया और डैडी को बोल दिया कि 'तुम नालायक व्यक्ति हो, तुम ऐसे हो, वैसे हो' तो फिर? ये पज़ल कैसे सॉल्व होगा? जैसे एलजेब्रा में इक्वेशन करते हैं, तो इसमें कैसे इक्वेशन करेगा?

प्रश्नकर्ता : बेटे को फादर से माफी माँग लेनी चाहिए।

दादाश्री : मगर लड़का माफी माँगता नहीं। माफी माँगता तो

काम हो जाता, तो इक्वेशन हो जाता। मगर चालीस साल का बेटा, वो डेप्युटी कलेक्टर ऑफ गोआ है, तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : प्रॉब्लम विल रिमैन एज़ इट इज़, नो सेटलमेन्ट। वैसे ही रहेगा, या तो कोई ऐसा काम बाहर से आ जाए, कोई इन्सिडेन्स हो जाए, उसमें दोनों की ज़रूरत हो तो दोनों एक हो जाएँगे।

दादाश्री : तो भी डैडी के मन में से नहीं जाएगा, वह तो डेबिट ही रहेगा। प्रॉफिट ऐन्ड लॉस अकाउन्ट भरपाई नहीं हो जाएगा। अकाउन्ट भरपाई होना चाहिए न? एलजेब्रा में इक्वेशन होता है, तो व्यवहार में भी इक्वेशन चाहिए, नहीं तो बैलेन्स कैसे करेगा? तो व्यवहार में इक्वेशन कैसे करेगा? बेटा तो डैडी को क्या कहता है कि 'आप जैसे थे वैसा मैंने बोल दिया।' इसलिए उसे इक्वेशन नहीं मँगता। मगर डैडी को तो नींद नहीं आती है, तो क्या करने का?

एक व्यक्ति किसी व्यापारी के पास से तीन हज़ार रुपये ले गया और फिर दस साल तक भरपाई नहीं किया तो व्यापारी क्या करता है? व्यापारी घाटे के खाते में उधार करके उस व्यक्ति के नाम जमा कर देता है। वह उसके नाम पर जमा कर देता है या नहीं? इक्वेशन तो करना चाहिए न?

तो डैडी के माइन्ड में से वरीज़ निकल जाए, ऐसा कुछ करना चाहिए न? तो क्या करोगे? अगर वह डैडी हमें मिल जाए तो हम बता देंगे कि 'तुम इक्वेशन कर दो।' वो बोलेगा कि 'कैसे इक्वेशन करने का?' तो हम बताएँगे कि यू आर नॉट अ परमानेन्ट डैडी। यू आर अ टेम्परेरी डैडी। डैडी परमानेन्ट है कि टेम्परेरी?

प्रश्नकर्ता : टेम्परेरी।

दादाश्री : हाँ, और वह लड़का भी टेम्परेरी है। डैडी भी टेम्परेरी है और बेटा भी टेम्परेरी है, तो इक्वेशन से डैडी कैसे हो गया? आई विटनेस से यह डैडी हो गया है और आई विटनेस से यह बेटा हो

गया है मगर सच्चे विटनेस से, रियल विटनेस से कोई किसी का बेटा भी नहीं और डैडी भी नहीं है। फिर इक्वेशन कैसे करने का? इक्वेशन ऐसे करने का कि आई विटनेस से मैं इसका डैडी हूँ और दूसरे रिलीजन विटनेस से यह मेरे डैडी है और मैं उनका बेटा हूँ। ऐसा इक्वेशन किया तो बेटा भी खुश हो जाएगा। फिर बेटे को डैडी से प्रेम हो जाएगा। ऐसा इक्वेशन आप करेंगे कभी? आपकी लाइफ में इक्वेशन करना पड़ेगा या नहीं करना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : करना है।

दादाश्री : तो यह समझ में आ गया, इक्वेशन कैसे करने का?

प्रश्नकर्ता : मगर फादर ऐसी रीत नहीं अपनाए, इस तरह से न सोचे तो?

दादाश्री : ऐसा करना ही पड़ेगा। इक्वेशन की रीत ही यह है और इस रीत से इक्वेशन नहीं करेगा तो सब रिलेशन टूट जाएँगे। क्योंकि बेटे के साथ फादर का रिलेटिव एडजस्टमेन्ट है, रियल एडजस्टमेन्ट नहीं है। माता, पिता, पत्नी, बेटा, सब रिलेटिव एडजस्टमेन्ट हैं। ये शरीर के साथ भी रिलेटिव एडजस्टमेन्ट है, तो माँ के साथ कैसे रियल होगा? ऑल दीज़ आर रिलेटिव एडजस्टमेन्ट, वो सब आई विटनेस से है।

जब आपकी शादी हो जाएगी और कभी आपकी स्त्री बहुत गुस्सा हो गई, तो फिर क्या दवाई लगाएँगे? आपको बोलेगी कि यू आर अनफिट। ऐसा-वैसा बोलेगी, तो आप क्या मेडिसिन करेंगे?

प्रश्नकर्ता : सेम इक्वेशन आ गया?

दादाश्री : हाँ, हज़बेन्ड इज़ वाइफ्स वाइफ। यह इक्वेशन लगा देने का, फिर कोई परेशानी नहीं। हम ज्ञानी नहीं हुए थे, तब तक हम इक्वेशन से सब जगह ऐसे ही रहते थे।

हमारा भतीजा हमें 'काका, काका' बोलता था। क्या बोलते हैं

आपकी भाषा में? चाचा बोलते हैं न? तो हमें 'चाचा' बोले तो बोझ बढ़ जाता था। हमें ज़्यादा मान दे दिया, तो मान का बोझ लगेगा न? तो फिर मैं मन में ऐसा बोलता कि 'वह मेरा चाचा है, मैं उसका भतीजा हूँ।' तब बोझ कम हो गया।

ऐसा इक्वेशन कर देगें न? तो लोग क्या बोलेंगे कि 'मैंने इतना कुछ बोल दिया तो भी इनके मुंह पर कुछ असर नहीं है। हमने इतना बोल दिया, तो भी आपको कुछ नहीं लगता?' तो आपको बोलने का, कि 'मेरे को लगता तो है, मगर तेरे प्रेम की वजह से मेरे को कुछ नहीं लगता।' तो फिर वह तुम्हारे पर ज़्यादा प्रेम रखेगा।

चौबीस तीर्थंकरों का मार्ग कैसा है? उसका फाउन्डेशन व्यवहार का है। पहले व्यवहार चाहिए। व्यवहार बिल्कुल करेक्ट चाहिए, आदर्श व्यवहार चाहिए।

हिसाबी व्यवहार को कब तक रियल मानोगे?

प्रश्नकर्ता : हमारा पौत्र गुजर गया है, उसका दु:ख दूर हो जाए और मन को शांति मिले, इतना ही चाहिए।

दादाश्री : हम सब रोना शुरू करें तो वह बच्चा वापस आ जाएगा?

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो नहीं होता। आज तक ऐसा नहीं हुआ है।

दादाश्री : तो फिर कुदरत की मर्ज़ी के खिलाफ क्यों चलते हो? और दूसरे बच्चे हो जाएँगे, इसमें क्या घबराने का?

प्रश्नकर्ता : ऐसा लगता है कि इतने थोड़े समय के लिए हमारे पास आकर हम को दु:ख देकर क्यों चला गया?

दादाश्री : वह खाते में जितना हिसाब था, वह सब हिसाब चुकता कर दिया और जितना दु:ख देने का था, उतना दु:ख देकर चला गया।

प्रश्नकर्ता : हिसाब क्या चीज़ है?

दादाश्री : वह तो, पूर्व जन्म का लेन-देन है, और कुछ नहीं है, कोई संबंध ही नहीं है। कोई रियल फादर भी नहीं है और कोई रियल लड़का भी नहीं। वह सब तो रिलेटिव है। रियल लड़का हो तो फादर जब मर जाता है, तो लड़के को भी उसके साथ जाना चाहिए। मगर कोई नहीं जाता उनके साथ, यह सब तो रिलेटिव है। सिर्फ हिसाब ही है। उसका थोड़ा तो दु:ख होता है, मगर इतना ज़्यादा दु:ख नहीं होना चाहिए।

आप रोते हैं तो भगवान को बुरा लगता है। आज रो रहा है, कल रोएगा, परसों रोएगा, चाहे कितना भी रोएगा तो भी एक दिन रोना तो बंद करना ही पड़ेगा न?! इसमें क्या फायदा? घर में पाँच व्यक्ति इकट्ठे होते हैं, उन सब का हिसाब ही है मात्र। दूसरा कोई संबंध नहीं। व्यापारी और ग्राहक के जैसे संबंध है। दूसरा कोई संबंध है नहीं। यह तो, आपने संबंध बनाया है कि, 'यह हमारी मदर है। यह हमारी वाइफ है।' वे सब विकल्प हैं। यह तो खाली एडजस्टमेन्ट लिया है आपने। सब, सब का हिसाब लेने के लिए जमा हुए हैं। जिसका हिसाब पूरा हो गया, वह चला जाता है। फादर भी चले जाते हैं। सच्चा लड़का कभी आपने देखा है? जो मर गया, वह आपका सच्चा लड़का था?

प्रश्नकर्ता : भौतिक देह में ऐसे कह सकते हैं कि वह सच्चा था।

दादाश्री : वो रियल लड़का नहीं था आपका। अगर रियल लड़का होता तो उसे जब जला दिया, तब आप भी उसके साथ बैठे होते। क्यों नहीं बैठे? वो रियल नहीं है, वह रिलेटिव है। सच्चा संबंध नहीं है, रिलेटिव संबंध है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसका आत्मा चला जाता है, फिर अपना उसके साथ संबंध नहीं रहा न?

दादाश्री : हाँ, मगर वह संबंध रिलेटिव संबंध था और आपके

साथ कुछ हिसाब बाकी था, वह ॠणानुबंध था। और उससे ही सारा जगत् चलता है।

प्रश्नकर्ता : यह ॠणानुबंध क्या है? कैसे होता है?

दादाश्री : आपका और आपके लड़के का जो व्यापार (संबंध) चल रहा है, उसमें आप अतिरेक करते हो, इससे फिर ॠणानुबंध शुरू हो जाता है। साधारण व्यवहार हो तो कुछ हर्ज नहीं है। आपने लड़के को गाली दिया, तो वो भी तय करता है कि, 'मैं भी उनको मार दूँ।' इससे सब दूसरे जन्म में इकट्ठे होते हैं और जो दिया था, वह फिर वापस आता है। जो लिया था, वही वापस देता है। बस, वही धंधा है।

प्रश्नकर्ता : कोई लड़का बाईस साल का या चौबीस साल का होकर मर जाए और दु:ख पहुँचाकर जाए तो वह कौन से कर्म का फल है?

दादाश्री : यह दुनिया ऐसी है, आप दूसरों को दु:ख देंगे तो वो लोग आपको दु:ख देंगे। आप दूसरों को सुख देंगे तो लोग आपको सुख देंगे। यह सब ऐसी ही व्यवहार की बात है। जैसा आप करते हैं, उसका वैसा ही बदला मिलता है।

प्रश्नकर्ता : मगर यह तो छोटा बच्चा था, निर्दोष था, मासूम था।

दादाश्री : वह तो आपका जो थोड़ा हिसाब था, वह कम्प्लीट हो गया। थोड़ा खर्चा कराने का और दु:ख देने का भी थोड़ा हिसाब था। उतना पूरा हो गया, तो फिर वो चला गया। अगर बाईस साल का होकर फिर मर गया होता तो आपको कितना दु:ख होता?

दूसरे व्यक्ति का लड़का नहीं मरता? जब आपका पौत्र मर जाए तो आपको दु:ख लगता है, तो दूसरे का लड़का मर जाए तब भी उतना ही दु:ख होना चाहिए। हमें तो समान होना चाहिए न? आपको कैसा लगता है? यह तो अपने खुद के लिए रोते हैं। दूसरों के लिए आपको कुछ नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : नहीं, सब के लिए होता है।

दादाश्री : सब का? इस वर्ल्ड में सब के लिए आपको ऐसा दु:ख होता है? नहीं, आपको सब के लिए ऐसा नहीं होता है। समानता होनी चाहिए। समानता हो जाए तो सब तुम्हारी इच्छा के मुताबिक हो जाए। ऐसी समानता नहीं होती है आपको, इसलिए ऐसा दु:ख होता है। समानता चाहिए न? यह तो स्वार्थ की बात है कि जो दूसरे का है, वहाँ आपको समानता नहीं रहती।

ये जो दुनिया के संबंध हैं, वे तो रिलेटिव संबंध हैं, रियल नहीं हैं। ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट। जो आँख से देख सकते हैं, कान से सुन सकते हैं, वे सब टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट हैं और आप परमानेन्ट हैं। जो रिलेटिव एडजस्टमेन्ट हैं, वह तो टेम्परेरी ही है। कोई जल्दी जाता है, कोई देरी से, वह भी रिलेटिव है। सब रिलेटिव है। उसमें कोई रियल है, परमानेन्ट है, ऐसा मान लेना ही नहीं।

जितना आपका इसके साथ संबंध था, हिसाब था, उतना हिसाब पूरा हो गया, चुकता हो गया तो वह चला गया। ये तो गेस्ट हैं सब। अपने घर गेस्ट आते हैं, वह फिर चले जाते हैं या नहीं चले जाते? अच्छा गेस्ट हो, आप उसको बोलें कि 'आप मत जाएँ, आपके घर मत जाएँ, हमारे यहाँ रहो' तो क्या वह रहेगा? नहीं रहेगा। ऐसे ये सब कुदरत के गेस्ट हैं। आप भी कुदरत के गेस्ट हैं। कोई किसी का लड़का नहीं है। यह सब ड्रामेटिक है। जैसे ड्रामा में लड़का होता है, तो वह ड्रामा के टाइम तक ही होता है। इस तरह लड़का कोई किसी का होता ही नहीं।

ये जो बिलीफ हैं, कि मेरे पास मकान नहीं है, मुझे लड़का नहीं है, मुझे लड़की नहीं है, ये सब रोंग बिलीफ हैं।

1928 में हमारे पहला लड़का हुआ था। उसका जन्म हुआ, तब हमने फ्रेन्ड सर्कल को बड़ी पार्टी दी थी। बच्चा भी ऐसा रूप वाला

था, ब्यूटीफुल था। सब लोग बोलते थे कि हमने जो संतों की सेवा की थी, उसका फल मिला है। डेढ़ साल के बाद वो मर गया। इधर हमने फ्रेन्ड सर्कल को फिर से बड़ी पार्टी दी, जलसा करवाया। सब लोग समझने लगे कि दूसरा लड़का आ गया। वे सब पूछने लगे। पार्टी पूरी होने के बाद हमने बोल दिया कि जो गेस्ट आया था, वह चला गया!!! इसके बदले में मैंने पार्टी दी है। उसके थोड़े साल बाद लड़की आई। वह भी चली गई। फिर उसके लिए भी पार्टी दी!!! क्योंकि मैं जानता हूँ कि कोई आत्मा किसी का लड़का हो नहीं सकता। यह सिर्फ रोंग बिलीफ ही है। आपका लड़का हो तो उसको तुम एक घंटे खूब गाली दो, मारपीट करो, तो फिर वह क्या बोलेगा?

प्रश्नकर्ता : बाप का नहीं मानेगा।

दादाश्री : नहीं, वह आपके साथ झगड़ा करेगा और कोर्ट में चला जाएगा। अपना लड़का हो तो ऐसा नहीं करेगा। उसे मार डालो तो भी ऐसा नहीं करेगा। मगर अपना लड़का होता नहीं न? सिर्फ रोंग बिलीफ है और रिलेटिव व्यू पोइन्ट है। यह रियल व्यू पोइन्ट नहीं। इधर कोई व्यक्ति मर जाता है तो फिर उसके पीछे उसका लड़का कोई मर जाता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो यह रियल बात नहीं है। ये सब रिलेटिव बातें हैं। आपका लड़का हो, उसको एक घंटा गाली दो तो वह एक घंटे में अलग हो जाता है न? और वाइफ के साथ झगड़ा हो जाए तो? डिवॉर्स भी हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो जाता है।

दादाश्री : फिर यह करेक्ट नहीं है, टेम्परेरी है। मगर टेम्परेरी भी नहीं पूरा। टेम्परेरी भी जो 50 साल, 60 साल करेक्ट होता तो फिर हर्ज नहीं। मगर टेम्परेरी भी करेक्ट नहीं है। यह खाट है, इसके साथ ऐसे आधार रखकर बैठें तो इसका आधार अच्छा है कि हम कभी

गिर नहीं जाते। मगर यह जीवित व्यक्ति का आधार रखा तो कभी भी गिर जाते हैं। मगर नेचर का अरेन्जमेन्ट ऐसा है कि एक-दूसरे के बिना चलता ही नहीं। ऐसा टेम्परेरी भी थोड़े टाइम के लिए रहता है, एकदम चला नहीं जाता। मगर वह खाट भी कभी तो टूट जाती है न? यानी ये भी रिलेटिव है। ये सब एडजस्टमेन्ट है और वो सब रिलेटिव है। और ये बॉडी के साथ भी अपना रिलेटिव एडजस्टमेन्ट है, रियल एडजस्टमेन्ट नहीं है। ये बॉडी भी एकदम चली नहीं जाती, मगर वह भी रियल एडजस्टमेन्ट तो नहीं है।

यह मनुष्य का शरीर (मिला) है, तो इससे अपना काम कर लेना है। सेल्फ रियलाइज़ेशन कर लो। फिर यह शरीर चला जाए तो कोई हर्ज नहीं। यह काम कर लो। काम नहीं कर लिया (निकाला) तो मनुष्य जन्म ऐसे ही व्यर्थ चला जाता है, वेस्ट चला जाता है।

यह जो आपका लड़का है, उसका आपके साथ ग्राहक और व्यापारी के जैसा संबंध है। व्यापारी को पैसा नहीं दिया तो माल नहीं देगा और व्यापारी माल अच्छा देगा तो ग्राहक लेगा, ऐसा व्यापारी-ग्राहक का संबंध है। आप लड़के को प्रेम देंगे तो वह भी आपके साथ अच्छा रहेगा, आपको नुकसान नहीं करेगा। उसे आप गाली दोगे, तो वह भी आपको मारेगा। ये लड़का-लड़की, सच्चे लड़का-लड़की नहीं रहते किसी के।

आज के लड़के कैसे हैं कि यदि बाप उन्हें थोड़ी भी गाली दे, गुस्सा करे तो वे क्या करेंगे? बाप को छोड़कर चले जाएँगे। अरे, कोर्ट में दावा भी करेंगे। एक लड़का उसके बाप के सामने केस जीत गया। बाद में बहुत खुश हो गया। वह लड़का फिर वकील को बोलने लगा, 'वकील साहब, एक काम करो तो आपको तीन सौ रुपये ज़्यादा दे दूँगा।' वकील ने पूछा, 'क्या काम करना है?' तब लड़के ने बताया, मेरे फादर की कोर्ट में थोड़ी नाक कटनी चाहिए!!! वकील ने बोला कि, 'यह तो सरल बात है, हम नाक कटाई करा देंगे।'

बोलिए, अब खुद का लड़का कैसा हो सकता है? यह तो

ऋणानुबंध है, हिसाब है। हिसाब में कुछ बाकी हो तो ज़रूर आएगा और हिसाब नहीं हो, बहीखाता क्लियर हो तो कोई नहीं आएगा!

प्रश्नकर्ता : पत्नी के प्रति फर्ज़ है, पुत्र के प्रति फर्ज़ है, वे सब फर्ज़ तो अदा करने पड़ेंगे न?

दादाश्री : फर्ज़ यानी फरजियात। आप नहीं करें, आपके विचार में नहीं हो तो भी करना पड़ेगा। वह सब फरजियात है।

कोई चीज़ इस दुनिया में वोलन्टरी नहीं है। जन्म से मृत्यु तक कोई चीज़ वोलन्टरी नहीं है। सब उसे मानते हैं वोलन्टरी है, मगर एक्ज़ेक्टली ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो वोलन्टरी कुछ नहीं है?

दादाश्री : वोलन्टरी है, मगर ऐसा जानते नहीं। वोलन्टरी अंदर है, वह मालूम नहीं है और जो वोलन्टरी नहीं है, फरजियात है, उसको वे अपनी ड्यूटी बोलते हैं।

प्रश्नकर्ता : सोसायटी में रहते हैं तो ये सब रिलेशन मेन्टेन करने चाहिए।

दादाश्री : हाँ, संसार में रहना ही चाहिए और स्त्री के साथ सिनेमा में जाना चाहिए, लड़के के साथ बैठना चाहिए, साथ में खाना-पीना चाहिए। मगर सच्ची बात समझकर करनी चाहिए। मगर सच्ची बात क्या है, वह तो समझनी चाहिए न? एक व्यक्ति ने ब्रांडी पी तो वह नाज़-नखरे करता है न? ऐसे यह भी सब नाज़-नखरे हैं। और अगर ब्रांडी नहीं पी तो कोई परेशानी नहीं रहती है। ऐसी बात समझ गए तो ब्रांडी के जैसी कोई परेशानी नहीं रहती है। सच्ची बात तो समझनी चाहिए न? ऐसी झूठी बात कहाँ तक चलेगी?

प्रश्नकर्ता : यह लाइफ भौतिक है और भौतिकवाद में कुछ टेन्शन होना ज़रूरी है। टेन्शन के बिना तो कुछ नया हो नहीं सकता, कुछ प्राप्ति नहीं कर सकते।

दादाश्री : आप क्या नया करेंगे? क्या नया आविष्कार करेंगे? नई दुनिया बनाएँगे? जो आविष्कार करते हैं, उसे टेन्शन रहता ही नहीं। जो मेहनत करता है, उसको ही टेन्शन रहता है। मैं सारी दुनिया में घूमता हूँ मगर मेरे को बिल्कुल टेन्शन नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपकी स्टेज तो अलग है।

दादाश्री : नहीं, मगर वह रियलाइज़ हो गया तो क्या होता है कि संसार का कोई टेन्शन नहीं रहता और संसार में सब को बहुत अच्छा प्रेम, सच्चा प्रेम मिलता है। अभी तो आपके पास प्रेम नहीं है, आसक्ति है, इसीलिए तो थोड़े-थोड़े टाइम पर गुस्सा हो जाते हो। यह क्या तरीका है? सच्चा प्रेम होना चाहिए। गुस्सा कभी भी नहीं होना चाहिए।

व्यवहार के हिसाबी संबंध में समाधान कैसे?

प्रश्नकर्ता : यह संसार है, उसमें हम घर में रहते हैं, मोटर-बंगले हैं, इन सब में रहते हुए भी, हम धर्म कर सकें, ऐसा हो सकता है क्या?

दादाश्री : धर्म के बिना तो संसार चलता ही नहीं। पहले धर्म चाहिए और संसार उसके साथ रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लोग तो ऐसा कहते हैं कि धर्म ही चाहिए और संसार को छोड़ देना चाहिए। यह सब है क्या?

दादाश्री : नहीं, धर्म के बिना संसार ही नहीं। पहले धर्म चाहिए। किस चीज़ को धर्म कहती हो? आपके भाई के साथ आप धर्म रखोगी या अधर्म रखोगी? भाई को गाली दोगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : क्योंकि गाली देना अधर्म है और गाली नहीं देना, मेरा भाई अच्छा है, ऐसा कहना धर्म है। धर्म तो होना ही चाहिए।

संसार को व्यवहार बोला जाता है। हम व्यवहार में आदर्श रहते हैं और सारा दिन धर्म में ही रहते हैं। हम किसी को गाली नहीं देते, किसी का बुरा नहीं करते। हमें कोई पत्थर मारे तो भी हम गाली नहीं देते और आपको कोई पत्थर मारे, तो आप क्या करोगी?

प्रश्नकर्ता : मैं भी पत्थर लेकर मारूँगी।

दादाश्री : हमें कोई पत्थर मारे तो हम गाली नहीं देते और खुदा को बोलते हैं कि इसको सद्‌बुद्धि दो। दो नुकसान नहीं होने चाहिए। एक तो पत्थर लग गया, फिर गाली देकर दूसरा नुकसान क्यों करें?

प्रश्नकर्ता : पहला नुकसान फिज़िकल और दूसरा स्पिरिचुअल!

दादाश्री : हाँ, जेब काट ली तो पाँच हज़ार तो गए फिर उसके साथ झगड़ा क्यों करें? झगड़ा करने से दो नुकसान होते हैं। एक तो नुकसान हो गया और फिर दूसरा झगड़ा किया। उससे नींद भी नहीं आएगी। उसको आशीर्वाद दे दिया तो अपने को नींद आएगी। ये बात पसंद आई आपको?

और शादी करेगी, फिर हज़बेन्ड के साथ कैसे रहोगी?

प्रश्नकर्ता : धर्म के साथ।

दादाश्री : हाँ, कभी हज़बेन्ड का दिमाग़ गर्म हो गया तो हमें शांत रहने का। हज़बेन्ड दो गाली दे दे तो भी शांत रहने का। हम क्या बोलते हैं कि 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। सास अच्छी न हो तो उसके साथ भी एडजस्ट हो जाना।

प्रश्नकर्ता : चुप हो जाने का?

दादाश्री : चुप नहीं होना, एडजस्ट हो जाना। उसके अंदर खुदा बैठे हैं, उनसे प्रार्थना करना कि 'हे खुदा, उसको अच्छा दिमाग़ दो, सद्‌बुद्धि दो।' तो उनको फोन पहुँच जाएगा। खुदा सब के अंदर बैठे

हैं न? और गाली देगी तो बुद्धि अच्छी नहीं रहेगी। हमने बताया ऐसा करोगी तो सास भी खुश हो जाएगी। वह कहेगी, 'ऐसी बहू तो देखी ही नहीं हमने।' वह जो कुछ दुःख हमें देगी, वह तो उसके साथ हमने अधर्म किया था वही होगा। तुम फिर से उनके साथ अब अधर्म नहीं करना।

हज़बेन्ड मुझे कायम के लिए दबा देगा, ऐसा डर मन में नहीं रखना। ऐसे कोई दबा नहीं सकता। हज़बेन्ड गाली दे और आप एडजस्ट हो गईं तो वह आपसे डर जाएगा, घबरा जाएगा। तब आप बोलना कि, 'घबराना मत, मैं आपकी ही हूँ', ऐसा करने से आपका चारित्रबल उत्पन्न होगा। जिसका चारित्रबल है, उससे सब व्यक्ति घबराते हैं।

प्रश्नकर्ता : यह चाबी मुझे बहुत पसंद आई।

दादाश्री : हाँ, इससे ही चारित्र उत्पन्न होता है, इससे ही शील उत्पन्न होता है। शील से सामने वाले पर अपना प्रभाव पड़ता है, सामने वाला घबराता है।

कोई व्यक्ति हमें पत्थर मारे और फिर हमारे पास आए, बोले कि 'मेरी भूल हो गई।' फिर हम कुछ नहीं करें, तो हमारे साथ फिर ऐसा कभी नहीं करेगा। कोई दूसरा हमें पत्थर मारने को आएगा तो भी वह उसको भगा देगा और बोलेगा कि 'ये बड़े व्यक्ति हैं।' बड़ा व्यक्ति किसे कहते हैं? जो गाली देता है उसे?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो बहुत छोटा होता है।

दादाश्री : जिसमें चारित्रबल है, वही बड़ा है।

वाइफ और हज़बेन्ड का झगड़ा होता है या नहीं होता? बहुत होता है, तो आपने सोचा नहीं कि हज़बेन्ड के साथ क्या करूँगी? पहले से सोचा नहीं था?

प्रश्नकर्ता : मैं वही सोचती थी कि मैं क्या करूँ?

दादाश्री : हाँ, तो हमने जो बता दिया है, ऐसे रखना। कभी मन में ऐसा नहीं सोचो कि हमें हज़बेन्ड दबा देगा। कोई भी बात हो, आप छोड़ देना। जितना आप छोड़ दोगी, उतना चारित्रबल प्रकट होगा। दूसरी बात यह है कि कभी कोई गाली दे तो उसको आशीर्वाद देना। गाली देने वाला कितनी गाली देगा? जितना आपका हिसाब है, उतनी ही गाली देगा। उससे ज़्यादा गाली नहीं देगा। उसकी भी हद होती है। हज़बेन्ड के साथ झगड़ा हुआ तो फिर संसार फ्रेक्चर हो जाएगा। फिर भले ही दोनों साथ में रहते हैं मगर मन टूट जाते हैं।

इतनी बात समझ में आ गई तो बहुत हो गया।

गृहस्थी में मतभेद, सॉल्यूशन कैसे?

दादाश्री : आपको कृष्ण भगवान के साथ झगड़ा नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं है।

दादाश्री : कृष्ण भगवान को तीर लगा था, यह मालूम है? तो यह कैसी दुनिया है? और रामचंद्र जी को क्या कुछ कम अड़चनें आई थीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, उन्हें वनवास जाना पड़ा था और 'सीता, सीता' करके घूम रहे थे।

दादाश्री : वनवास का तो ठीक है। अभी तो ये सब लोग बैठे हैं न, इन सब को कायम का वनवास है। जन्मे तब से ही वनवास है। मगर रामचंद्र जी की पत्नी को तो हरण करके ले गया था। ऐसा इधर इन सब के साथ तो नहीं होता न? कितना आनंद है! ऐसी कोई तकलीफ तो आपको नहीं आई न?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो नहीं आई।

दादाश्री : आपका स्त्री के साथ किसी दिन झगड़ा नहीं हुआ था?

प्रश्नकर्ता : सांसारिक जीवन में होता ही रहता है।

दादाश्री : ऐसा झगड़ा होता है तो फिर शादी करने का क्या फायदा? एक व्यक्ति हमारे पास आया, वह हमें बोलने लगा कि, 'मेरी स्त्री ने मुझे मारा।' तो उसका क्या न्याय करने का? आप कहें, आपकी दृष्टि में क्या न्याय लगता है? स्त्री को फाँसी पर चढ़ाना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : फाँसी पर क्यों चढ़ाने का! मर्द और स्त्री का तो आपस का संजोग है।

दादाश्री : तो फिर मार खाने का? ऐसी शादी में क्या फायदा कि जहाँ मार भी खाने का! मगर सब लोग शादी करते हैं न? फिर 'यह मेरी वाइफ, यह मेरी वाइफ' करता है मगर वह पिछले जन्म की वाइफ का क्या हुआ? यह सब पिछले जन्म के लड़कों का क्या हुआ? वे सब उधर छोड़कर आया और ऐसे ही यहाँ छोड़कर आगे जाएगा। क्या यही धंधा है? यह पज़ल सॉल्व तो करना चाहिए न? कब तक ऐसे पज़ल में रहोगे?

कभी स्त्री पर क्रोध हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : जो अच्छा-अच्छा लड्डू देती है खाने को, उसके पर भी क्रोध करते हो? वहाँ तो क्रोध नहीं करना चाहिए। बाहर पुलिस वाले पर क्रोध करो तो कोई हर्ज नहीं है। वहाँ क्रोध नहीं करते? वहाँ क्यों कंट्रोल में रहते हैं?

प्रश्नकर्ता : वहाँ डर है।

दादाश्री : पुलिस वाले के पास निडर हो जाओ और इधर घर में डरो। जो खाना खिलाती है, सवेरे में चाय-नाश्ता देती है, वहाँ क्रोध करोगे तो खाने-पीने का सब बिगड़ जाएगा। वाइफ का धनी हो जाता है?! धनी होने में हर्ज नहीं है मगर धनीपन नहीं करना चाहिए।

इट इज़ अ ड्रामा, तो आप ड्रामा के धनी हो। द वर्ल्ड इज़ द ड्रामा इटसेल्फ!

प्रश्नकर्ता : हम गृहस्थ हैं, हमें लोकाचार का पालन तो करना पड़ता है।

दादाश्री : लोकाचार भी तुम्हारा अच्छा नहीं है। कभी-कभी स्त्री के साथ मतभेद हो जाता है, फ्रेन्ड के साथ मतभेद हो जाता है न? लोकाचार आदर्श होना चाहिए। हमारी भी स्त्री है, मगर वह तो 'पटेल' की है, 'हमारी' तो कोई स्त्री नहीं है। इस 'पटेल' की स्त्री है, मगर एक भी मतभेद उसके साथ नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह कैसे संभव है? मतभेद तो रहेगा ही।

दादाश्री : मतभेद तो कभी हुआ ही नहीं। वह कभी बोले कि, 'आप ऐसे हैं, वैसे हैं, भोले हैं, लोगों को सब दे देते हैं'। तो मैं कहता हूँ कि, भाई, पहले से ही मैं ऐसा था, आज से नहीं। फिर कैसे मतभेद होगा? अभी तो ऐसा कुछ बोलती ही नहीं है और हमारा दर्शन करती है।

बीवी से एडजस्टमेन्ट की चाबी

प्रश्नकर्ता : अपनी बीवी-बच्चों से एडजस्टमेन्ट कैसे करना?

दादाश्री : बीवी के साथ कभी झगड़ा नहीं करने का। बीवी झगड़ा करे तो आपको कहने का कि किसलिए झगड़ा करती है? इसमें क्या फायदा है? फिर भी वह बोलती है तो बोलने दो, कोई एतराज नहीं।

प्रश्नकर्ता : वह बोलेगी और हम रोकेंगे नहीं तो उसमें और खराबी हो जाएगी न?

दादाश्री : उसे क्या मूछें आ जाएँगी? वह क्या पुरुष हो जाएगी? यह तो खाली डर है। यह तो डर से जग में झगड़े चलते हैं। हमने

देखा है कि एक जन्म का किसी के हाथ में नहीं है। आप उसको मार-मार करेंगे तो भी वह बोलेगी। इसमें आपका भी नुकसान होता है और बीवी का भी नुकसान है। यह सब छोड़ दो और क्या होता है, क्या हो रहा है, वह 'देखो'। हम सब को क्या बोलते हैं कि एडजस्ट एवरीव्हेर!

एक मियांभाई हमारा पहचान वाला था। मैंने उसे बोल दिया कि 'भाई, स्त्री के साथ ठीक रहता है या नहीं?' तो कहने लगा कि 'हमारा सब ठीक है।' मैंने पूछा कि 'इन सब का बीवी के साथ झगड़ा होता है और तुम्हारा कभी झगड़ा नहीं होता?' तो बोला कि, 'हमारा कभी नहीं होता। बीवी के साथ झगड़ा करके क्या फायदा?' मैंने पूछा कि, 'बीवी किसी दिन गुस्सा नहीं हो जाती?' तो बोलने लगा कि, 'कभी गुस्सा हो जाती है। मगर बीवी के साथ झगड़ा करने में तो, देखो न, हमारे तो दो ही रूम हैं, तो इधर झगड़ा करेगा तो सारी रात जिस रूम में वह जागेगी और उसी रूम में मैं जागूँगा। इसमें फायदा क्या है? बीवी हमें गाली देगी, मगर बीवी को हम गाली नहीं देंगे। बीवी को हम नहीं मारेगा।' मैंने कहा, 'क्यों?' तो कहता है कि, 'बीवी तो हमें सुख देती है। बीवी कितना अच्छा खाना बनाती है, अच्छा मटन भी बनाती है। फिर उसके साथ ही क्यों झगड़ने का? हम तो पुलिस वाले को मारेगा, बाहर वाले को मारेगा, घर में किसी को नहीं मारेगा।' अपने लोग क्या करते हैं कि बाहर से मार खाकर आते हैं और घर में स्त्री को मारते हैं।

स्त्री तो देवी है। उसके साथ झगड़ा कैसे हो सकता है? उसका दिमाग़ गर्म हो जाए, तो भी कोई हर्ज नहीं। थोड़ी देर में दिमाग़ ठंडा हो जाएगा। फिर समझाना कि 'तुम क्या-क्या चाहती हो, हमें एक बार बता दो', इस तरह उसे पटाना। आप दुकान में कैसे सब को खुश कर देते हो, वैसे घर में सब को खुश कर देना है।

यह अपनी वाइफ है, ऐसा मत मानो और यह अपने पर चढ़ बैठेगी ऐसा मत मानो। अरे, क्या चढ़ बैठेगी? उसे मूछें नहीं आ

जाएँगी, वह स्त्री ही रहेगी। एक जन्म में जो तय किया है, वही होगा, ऐसा ही करेगा। तो स्त्री के साथ आराम से रहने का, फाइल का निपटारा (सॉल्यूशन) समभाव से करने का।

एक जन्म की बात आपकी समझ में आ गई? देखो, हम घर में अकेले हो और बाहर निकलने का हो गया, तो हम दरवाज़ा खुला नहीं रखेंगे, ताला लगाएँगे। क्यों ऐसा करते हैं? कि इस ज़िंदगी में तो कुछ होने वाला नहीं, मगर दरवाज़ा खुला देखकर दूसरे किसी को विचार आएगा चोरी करने का। आज तो कुछ नहीं होगा, मगर वह अगले जन्म में चोर हो जाएगा। इसलिए ऐसे दरवाज़ा खुला नहीं रखने का, ताला लगाकर जाने का।

'यह मेरी स्त्री है' बोलते हैं न, वह रिलेटिव में है। रियल में अपने कोई सगे ही नहीं होते। बोलते हैं न कि यह मेरी माँ है, तो वह भी रियल सगापन (संबंध) नहीं है। इस बॉडी के साथ भी रियल सगापन नहीं है, तो माँ के साथ रियल सगापन कैसे हो सकता है? वह सब रिलेटिव है।

माँ के साथ रियल सगापन हो तो माँ मर जाए, तो उसके दो-चार लड़के हों तो वे भी उसके साथ मर जाते। मगर कोई माँ के साथ नहीं मरता न! वह रिलेटिव सगाई है। रिलेटिव यानी बॉडी का आधार है। यह बॉडी भी रिलेटिव है और उसका आधार भी रिलेटिव है, रियल नहीं है। मदर के साथ ब्लड रिलेशन है और फ्रेन्ड होगा तो उसके साथ नेबर रिलेशन है। मगर सब रिलेशन ही हैं, केवल।

व्यवहार में शंका? समाधान, विज्ञान से

कोई व्यक्ति अपने यहाँ आता रहता है और एक दिन हमारे कोट की जेब में से दो सौ रुपये ले गया और इस भाई ने देख लिया। मगर दूसरे किसी ने नहीं देखा। इस भाई ने बोल दिया कि यह व्यक्ति आपकी जेब में हाथ डाल के कुछ रुपये ले गया। तो मेरी समझ में आ जाएगा कि यह व्यक्ति हमारे दो सौ रुपये ले गया। मगर दूसरे

दिन वह फिर हमारे पास आएगा तो भी हमें उसके लिए शंका नहीं होगी। ऐसे कितने लोगों को शंका नहीं होगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं, सब को शंका तो हो ही जाएगी।

दादाश्री : तो जब तक शंका है, तब तक आपको ज्ञान नहीं है। यह व्यक्ति आया और कुछ ले गया, मगर हम को शंका नहीं होगी। कोई ले सकता ही नहीं, ये दुनिया ऐसी है। वह व्यक्ति अगर दूसरी दफे भी ले जाएगा, तो उसका कुछ पासपोर्ट है, उससे ही लेता है। नहीं तो कोई कुछ भी ले सकता ही नहीं। इस दुनिया में किसी के पास संडास जाने की खुद की शक्ति नहीं है। ऑल आर टॉप्स!! जो खुद की शक्ति है, वह उसको मालूम नहीं है। हम निःशंक हैं, कौन से आधार से वह करता है, यह हम जानते हैं। कोई व्यक्ति कुछ भी ले सकता है तो उसके पीछे कुछ आधार है। नहीं तो कोई व्यक्ति कुछ ले सकता ही नहीं। वह आधार जिसे मालूम पड़ गया, फिर उसे क्या परेशानी? उसे किसी के साथ झगड़ा करने की ज़रूरत ही नहीं है। आपको अभी थोड़ी शंका हो जाती है? पूरे निःशंक नहीं हो जाएँ, तब तक शंका होती रहेगी।

इस वर्ल्ड में किसी से कोई चीज़ हो सकती ही नहीं। क्योंकि दिस इज़ अ रिज़ल्ट। जन्म हुआ, वहाँ से लास्ट स्टेशन तक रिज़ल्ट ही है खाली। परीक्षा अंदर हो रही है, मगर उसको मालूम नहीं है। जब रिज़ल्ट आता है तो झगड़ा करता है, कि यह व्यक्ति हमारा पैसा ले गया। इसी से संसार खड़ा है। सच्ची दृष्टि नहीं है, इसलिए सब दुःख है।

कोई व्यक्ति कुछ भी कर सकता ही नहीं। जो पहले से टाइप हो गया है वही बात है इसमें। हमारा किसी के साथ मतभेद नहीं है। कोई रुपये ले जाए, उसके साथ भी मतभेद नहीं है। वह व्यक्ति फिर आए तो हम उससे कहेंगे, 'आओ, बैठो!' यदि ऐसा नहीं बोलेंगे तो हमें उसके साथ द्वेष हो जाएगा और हमारी समाधि चली जाएगी। जहाँ द्वेष है, वहाँ समाधि नहीं है। मगर हम को निरंतर समाधि रहती है।

ऐसा 'अक्रम विज्ञान' आज प्रकट हुआ है। यह वर्ल्ड क्या चीज़ है? कैसे चल रहा है? कौन चलाता है? वह दो सौ रुपये ले गया है, वह कैसे ले गया? वे सब चाबियाँ हमारे पास हैं। क्योंकि यह विज्ञान सर्व-समाधानी विज्ञान है। सर्व-समाधानी यानी एट एनी प्लेस, एट एनी टाइम, इन एनी सरकमस्टेन्स। साँप आएँ, बड़े लुटेरे आएँ, तो भी यह विज्ञान वहाँ समाधान देता है।

पिछले जन्म की पत्नी का क्या?

प्रश्नकर्ता : यह भाई गृहस्थी में ब्रह्मचारी है, 'सात प्रतिमा'धारी है (ब्रह्मचर्यव्रतधारी), लेकिन उनका दु:ख ऐसा है कि मेरे मरने के बाद पत्नी का क्या होगा, इसकी बड़ी चिंता है। आप इनका समाधान करवाइए।

दादाश्री : वह पिछले जन्म की पत्नी का क्या हुआ?

प्रश्नकर्ता : पिछले जन्म का क्या मालूम?

दादाश्री : तो फिर किसलिए चिंता करते हो? वह आपकी पत्नी कैसे है? वह तो सब व्यवहार से है। वह कर्म के उदय से है। जब तक उसने डिवॉर्स नहीं लिया, तब तक आपकी पत्नी है और डिवॉर्स ले लें तो?

प्रश्नकर्ता : यों तो डिवॉर्स जैसा ही है। ब्रह्मचर्य का मतलब ही यह है कि पति-पत्नी का संबंध ही नहीं है।

दादाश्री : ब्रह्मचर्य वाला पत्नी की परवाह नहीं करता। आप खुद की परवाह करें। जहाँ तक पत्नी अपने साथ है, वहाँ तक उसकी सेवा करना, दूसरों की भी सेवा करना। तुम्हारे पीछे क्या होगा यह क्या मालूम? आपका 'वहाँ' जाकर क्या होगा यह भी क्या मालूम? आपके पास कोई सर्टिफिकेट है कि वहाँ जाएँगे तो कुछ स्थान मिलेगा? और स्त्री को पूछेंगे तो स्त्री कहती है कि 'तुम हमारी फिकर मत करो।' आप खुद ही ऐसा करते हैं। ब्रह्मचारी को ऐसा नहीं होना चाहिए।

व्यू पोइन्ट का मतभेद, उपाय क्या?

यह वर्ल्ड मेन्टल हॉस्पिटल हो गया है। हमें कोई कहे कि 'आप मेन्टल हैं।' तो हम कहेंगे, 'भाई, तुम्हारी बात सही है। तुमने हमें बताया, यह भी तुम्हारा उपकार है।' आप मेन्टल हैं, इतना शब्द बोलकर छोड़ दिया, वह तो हम पर कितना उपकार किया। नहीं तो दूसरा तो मेन्टल इतने शब्द से ही नहीं छोड़ देता, वह तो लकड़ी लेकर मारता, सबकुछ कर सकता। मेन्टल का क्या गुनाह? कोई गुनाह नहीं न!

एक बैल खड़ा है उधर, तो हर एक को आप पूछेंगे कि क्या दिखता है उधर? तो कोई बोलेगा कि बैल दिखता है। कोई बोलेगा, हमें गाय दिखती है। कोई बोलेगा, हमें घोड़ा दिखता है। जिसकी जैसी दृष्टि पहुँचे, वैसा वह बोलेगा। दृष्टि नहीं पहुँचे तो फिर क्या करेगा? फिर बोलेगा, हमें गधा दिखता है। तो क्या बुरा मानने का? क्या हमें उस पर गुस्सा हो जाने का कि बैल है और तुम क्यों गधा बोलते हो? उसको दिखता नहीं, फिर उसका क्या गुनाह है बेचारे का? ऐसी ही सब भूल है दुनिया में। सच्चा दिखता नहीं, इसलिए भूल होती है।

कोई व्यक्ति हम से कहे कि आप गधे हो, तो हम समझ जाएँगे कि यह बात सही है। उसको जैसा दिखता है, ऐसा ही बोलता है। उसको मार-मार के उसका व्यू पोइन्ट बदलवाना अच्छा नहीं है। उसको समझाकर व्यू पोइन्ट बदलवा सकते हैं। जैसा जिसका व्यू पोइन्ट है, ऐसा ही वह करता है। कुत्ता, गधा, सभी जीव और सभी व्यक्ति भी जिसका जो व्यू पोइन्ट है, ऐसा ही करता हैं।

प्रश्नकर्ता : यह दूसरी योनि में से मनुष्य में वापस आ सकते हैं क्या?

दादाश्री : वे सब दूसरी योनि में से ही इधर आते हैं। पशु में से कुत्ता, गधा वे सब इधर ही आते हैं। 32% से गधा होता है और 33% से मनुष्य होता है। 33% से पास होता है।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के सिवा दूसरे जो प्राणी हैं, वे प्रामाणिक हैं। उनकी योनि में भी बहुत अच्छे गुण हैं।

दादाश्री : हाँ। उनके परसेन्ट अच्छे रहते हैं। जो 32% से नापास हुआ हो वह मनुष्य जैसा ही दिखता है और 33% से पास हुआ हो, वह मनुष्य में होते हुए भी जानवर जैसा दिखता है। 33% से पास वाला तुमने देखा है या नहीं देखा?

प्रश्नकर्ता : देखा है।

दादाश्री : उनके साथ झगड़ा मत करो। जो 33% से पास हुआ है, उसके साथ क्या झगड़ा करना?! जो 50% से पास हुआ है, उसके साथ झगड़ा करो न!

प्रश्नकर्ता : जहाँ देखो वहाँ लोग स्वार्थी ही दिखाई देते हैं, ऐसा क्यों?

दादाश्री : कभी स्वार्थी व्यक्ति तुमने कोई देखा है? हम अकेले ही स्वार्थी हैं!!! क्योंकि हम 'स्व' के अर्थ के लिए जीते हैं। आप जिसे स्वार्थी कहते हैं, वह स्वार्थ तो भ्रांति का स्वार्थ है यानी स्वार्थ नहीं, परार्थ है। परायों के लिए सच्चा-झूठा करता है, दखलबाज़ी करता है और अपार दु:ख सहन करता है। वो सब परार्थी हैं। परार्थी तो खुद का स्वार्थ बिगाड़ता है।

संसार, अपनी ही दखलों का प्रतिघोष

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि कोई जीव दूसरे किसी जीव में दख़ल नहीं देता है, वह कैसे?

दादाश्री : वर्ल्ड में दखल करने वाला कोई जीव है ही नहीं। वह जो दखल करता है, वह तुम्हारी दखल का प्रतिघोष है। तुम्हारी समझ में आ गया न?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, और समझाइए!

दादाश्री : हमने कुछ दखल नहीं की है, तो हम में कोई दखल नहीं करता। वह तुम को जो दखल करता है, वह तुम्हारा पहले के जन्म का हिसाब है। आपको किसी ने दो गाली दी, तो आप सोचना कि दो ही गाली क्यों देता है? तीन क्यों नहीं देता है? एक क्यों नहीं देता है? फिर आप बोलेंगे कि 'भाई, दो गाली दी, अभी और दूसरी दो गाली दे दो।' तो वह बोलेगा कि क्या हम नालायक व्यक्ति हैं? हम गाली नहीं देगा। गाली देना भी उसके हाथ में नहीं है। आपका हिसाब है, उतना ही मिलेगा। अगर आपको व्यापार चालू रखने का हो तो आप फिर से गाली दो और बंद करने का है तो गाली मत दो।

प्रश्नकर्ता : भगवान का न्याय और जगत् का न्याय अलग है क्या?

दादाश्री : दोनों अलग हैं। जगत् का न्याय भ्रांति से होता है। ये सब भ्रांति वाले न्यायाधीश हैं और भगवान का न्याय शुद्ध है। जैसा है वैसा ही न्याय करते हैं। दोनों न्याय अलग हैं।

जगत् का न्याय तो क्या कहेगा कि, जिसने जेब काट ली, उसकी भूल है और भगवान का न्याय कहता है कि जिसकी जेब कट गई, उसकी भूल है। भगवान का सरल न्याय है। वास्तविक न्याय!! एक सेकन्ड भी यह जगत् न्याय बिना नहीं होता है। जैसा है, वैसा ही न्याय देता है। तुम में दखल करने वाला कोई वर्ल्ड में नहीं है। तुम्हारी दखल एक अवतार बंद हो जाएगी, फिर कोई दखल करने वाला नहीं है। सारे बम्बई में गुंडागर्दी चलती है, मगर आपको कोई हाथ नहीं लगाएगा।

प्रश्नकर्ता : यह दखल बंद कैसे करने की?

दादाश्री : कोई गुंडा तुम्हारी होटल में आ गया, उसे तुमने झगड़ा करके निकाल दिया। बाद में तुम 'दादा भगवान' को नमस्कार करके बोलना कि, 'हे भगवान! मुझे ऐसा करने का विचार नहीं था, मगर मुझे करना पड़ा', तो ऐसे हमारे सामने आलोचना-प्रतिक्रमण-

प्रत्याख्यान वहाँ घर पर बैठकर भी याद करके करोगे, तो तुम्हारी दखल पूरी हो जाएगी।

क्या करने का, समझ गए न? देखो, ऐसा बोलने का, 'हे दादा भगवान, हमने गुंडे को बहुत मार दिया। हम को पश्चाताप होता है। उसकी मैं माफी माँगता हूँ, फिर ऐसा नहीं करूँगा' ऐसे बोलेगा तो बहुत हो गया।

आपकी दखल कब कही जाएगी कि जब गुंडे को आपने मार दिया और पीछे बोलो कि गुंडे को तो मारना ही चाहिए। तो यह दखल हो गई। तुम्हारा अभिप्राय फिट हो गया कि मारना ही चाहिए। तो दखल चालू रहेगी और अगर तुम्हारा ओपिनियन ऐसा फिट हो गया कि मारना नहीं चाहिए और ऊपर से प्रतिक्रमण किया तो तुम्हारी दखल बंद हो जाएगी।

यह सब वीतराग भगवान की बात है। चौबीस तीर्थंकरों की बात है। कितनी अच्छी यह बात है!!!

आपकी जेब जो काटता है, वह सचमुच गुनहगार नहीं है। वह तो निमित्त है। गुनाह आपका है। आपको आपके गुनाह का फल मिलने का (समय) हुआ, तब वह निमित्त मिला है। उसका कोई गुनाह नहीं है। आज आपके गुनाह से वह निमित्त आ गया है। वह (जेब) काटने वाला तो अभी इधर से पैसा काट कर ले गया। उसको तो बहुत आनंद है, होटल में जाएगा, खाना खाएगा। दुःख किसे होता है? जिसे दुःख है उसका ही गुनाह है और वो व्यक्ति (जेबकतरा) जब पुलिस के हाथ में पकड़ा जाएगा, तब उसका गुनाह पकड़ा जाएगा। आज आपको दुःख होता है, तो आपका गुनाह पकड़ा गया। ऐसा हर एक मामले में है। आपको कोई गाली दे तो वह गुनाह आपका है, गाली देने वाले का नहीं। लोग क्या मानते हैं कि ये गाली देता है, इसका ही गुनाह है। चोर ने जेब काटी तो चोर ही गुनहगार है, ऐसा बोलते हैं न सब लोग?

प्रश्नकर्ता : अभी तक तो मैं भी वही मानता था कि गुनहगार चोर ही है।

दादाश्री : आप ही मानते हैं ऐसा नहीं, सारी दुनिया मानती है। मगर आप सोचेंगे तो आपको ख्याल में आ जाएगा कि इसका गुनाह नहीं है।

प्रश्नकर्ता : चोर का गुनाह तो अभी नहीं है, लेकिन जब पकड़ा जाता है, तब गुनाह क्यों हो जाता है?

दादाश्री : नहीं, उस टाइम तो उसका गुनाह पकड़ा गया। तुमने पहले चोरी की थी, तो आज पकड़े गए। ऐसा उसने चोरी आज की मगर पुलिस पकड़ेगी तब उसका गुनाह पकड़ा जाएगा। 'भुगते उसी की भूल', जो भुगतता है उसी की भूल है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी कभी-कभी ऐसा लगता है, इस संसार में बहुत बड़ा अन्याय होता है।

दादाश्री : इस संसार में कभी अन्याय नहीं होता। जो भी कुछ होता है, वह न्याय ही होता है। हर एक जीव अपना खुद का होल ऐन्ड सोल रिस्पोन्सिबल है। दूसरा कोई इसमें दखलंदाज़ी नहीं करता है। दूसरा कोई जो कुछ करता है, वह निमित्त है। कोई किसी को कुछ कर सकने वाला ही नहीं है। मगर अपनी ही भूल से वह निमित्त मिलता है। जिसकी भूल नहीं, उसको निमित्त नहीं मिलता। भगवान महावीर को कोई निमित्त नहीं था। क्योंकि उनकी भूल खत्म हो गई थी। भूल थी तब तक उनके भी निमित्त थे और तब तक उन्हें उपसर्ग भी आए थे। किसी भी जीव को कुछ भी दु:ख नहीं देना चाहिए। कोई अपने को दु:ख दे तो सहन कर लेना चाहिए। किसी को दु:ख देने से बहुत रिस्पोन्सिबिलिटी आती है।

कितने नुकसान झेलोगे? एक या दो?

किसी ने तुम्हारी जेब काट ली और पचास हज़ार चले गए फिर

तुम चोर को गाली देते हो मगर वह रुपये फिर वापस आते हैं या नहीं आते?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएगा।

दादाश्री : नहीं? तो तुम एक नुकसान में दो नुकसान झेलते हो। एक नुकसान तो निर्माण हुआ था और आप दूसरा भी खाते हो। किसी का एक ही लड़का हो, वह मर जाए तो लड़का गया, वह एक नुकसान तो हुआ और पीछे रोता है, सिर फोड़ता है, कितना दु:खी होता है मगर लड़का क्या वापस आता है? घर के सभी व्यक्ति रोने लगें तो भी वापस नहीं आता? ऐसे सभी लोग दोहरा नुकसान झेलते हैं।

पाँच लाख का मकान हो, वो 'मेरा मकान, मेरा मकान' कहता है मगर मकान जल जाए तो कितना दु:ख होता है? मकान जल गया वो एक नुकसान है, फिर रोता है वो दूसरा नुकसान है।

पाँच लाख का मकान हो और बनाने के बाद जल गया तो दु:ख होता है। कितना दु:ख होता है? पाँच लाख के हिसाब में दु:ख होता है। वह मकान बेच दिया, दस दिन के बाद वह मकान जल गया तो? उसके पाँच लाख रुपये ले लिए, फिर मकान जल गया तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : तब कुछ नहीं, अब अपना क्या?

दादाश्री : पाँच लाख रुपये अपने घर लाए, और सब रुपये चोरी हो गए, फिर दूसरे दिन मकान जल जाए तो? तो भी असर नहीं होता न? पाँच लाख रुपये उसके हाथ में नहीं रहे, मकान बेच दिया था, फिर मकान जल गया मगर उसको कुछ असर नहीं होता, क्यों? वो ममता दु:ख देती है। तुम्हें ममता है? यह घड़ी तुम्हारी है, उसकी ममता तुम्हें है? ऐसी कितनी सारी चीज़ों में तुम्हारी ममता है? ऐसी सब चीज़ें लिख लें, लिस्ट बना दे तो कितने कागज़ हो जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : बोल नहीं सकते कि कितने कागज़ हो जाएँगे?

दादाश्री : और जब मरने की तैयारी होती है, तब यह सब इधर ही छोड़कर जाने का। तो दु:ख कौन देता है? सभी जगह पर ममता की, वही दु:ख देती है। मगर तुम पहले से जानते नहीं कि यह सब छोड़कर जाने का है? अपने फादर भी छोड़कर चले गए थे, वह आप जानते नहीं है?

प्रश्नकर्ता : फिर भी जो आँख से दिखता है, उसे मिथ्या कैसे मानें?

दादाश्री : जब एक्सपीरियन्स हो जाता है, तब मिथ्या मालूम हो जाता है। अभी एक लड़के ने शादी की तो उसकी वाइफ आई, वह मिथ्या नहीं लगती है। वह सत्य ही लगता है। और छ: महीने के बाद डिवॉर्स दिया फिर ? तो मिथ्या हो गया। जब तक एक्सपीरियन्स नहीं हुआ, तब तक मिथ्या नहीं लगता। आँख से दिखता है, बुद्धि से समझ में आता है, वह सब मिथ्या है। आँख से जो दिखता है वह सब भ्रांति है, सच्ची बात नहीं है। जैसे एक व्यक्ति ने दारू पी हो, खूब दारू पी, फिर जो बोलता है, वो दारू के नशे में बोलता है। ऐसे ही ये सब लोग भी नशे में ही बात करते हैं। मोह के नशे में हैं। मोह की दारू बहुत भारी है। ये सब लोग सारा दिन मोह के नशे में ही घूमते हैं।

यह वाइफ को 'मेरी है, मेरी है' करता है, मगर जब उसके साथ एक घंटा झगड़ा हो जाए फिर? फिर क्या होता है? डिवॉर्स और बाप-बेटे का एक घंटा झगड़ा हो गया तो? तो दोनों कोर्ट में चले जाएँगे। ऐसा ये सब मिथ्या है। मिथ्या सत्य कैसे हो जाएगा? कभी नहीं होगा। ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर ओन्ली टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट, नॉट परमानेन्ट एडजस्टमेन्ट! कोई परमानेन्ट एडजस्टमेन्ट तुमने देखा? नहीं? सब टेम्परेरी? क्योंकि यह देह भी टेम्परेरी है, तो वह टेम्परेरी में से परमानेन्ट कैसे हो जाएगा? और आप खुद आत्मा हैं, वो परमानेन्ट है। उसका रियलाइज़ेशन हो जाए तो फिर परमानेन्ट का अनुभव होता

है। फिर ये मोह चला जाता है, निरंतर परमानेन्ट सुख, निरंतर परमानंद ही रहता है।

निमित्त को निमित्त समझें, तो?

एक व्यक्ति जान-बूझकर पत्थर मारता है और एक बंदर है, वह आपके ऊपर पत्थर गिराता है। वो पत्थर आपको बहुत ज़ोर से लग जाता है। दोनों पर आपका भाव बिगड़ता है, दोनों पर आपको गुस्सा आता है? पर आपने देखा कि ये तो बंदर है, तो आप क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : उसे भगा देते हैं।

दादाश्री : मगर उस पर गुस्सा क्यों नहीं किया?

प्रश्नकर्ता : कुछ परपज़ली (जान-बूझकर) तो नहीं किया है उसने।

दादाश्री : और वह व्यक्ति जान-बूझकर पत्थर मारता है तो?

प्रश्नकर्ता : वहाँ गुस्सा आ जाता है।

दादाश्री : वह जो पत्थर मारता है न, वे सभी बंदर की तरह ही हैं। आपको यह ख्याल नहीं है। आपको लगता है कि वह जान-बूझकर मारता है मगर ऐसा नहीं है। वह भी बंदर की तरह ही है। हम देखते हैं कि सब बंदर की तरह ही हैं। इतना समझ गए तो कितनी गलती कम हो जाएगी!

जहाँ झगड़ा है, वहाँ पशुता है। भगवान ने क्या कहा है कि तुम्हें दो गाली तुम्हारा पड़ोसी दे, तो (वास्तव में) वो देता ही नहीं। बंदर पत्थर मारता है, उस तरह समझ जाने का है। वह तुम्हारे ही कर्म का फल मिलता है और वह तो निमित्त है। तुम को गाली पसंद हो तो फिर तुम व्यापार करना। उसको तीन गाली दोगे तो तीन गाली वापस आएँगी। पाँच गाली दोगे तो फिर पाँच आएँगी। जितनी गाली दोगे उतनी ही वापस आएँगी। एक दफे कुछ भी नहीं बोला तो ये तुम्हारा खाता पूरा हो गया। मोक्ष में जाना है, तो सब खाते बंद तो

करने पड़ेंगे न? कोई भी व्यक्ति नुकसान करे तो वह निमित्त ही है और निमित्त को मारने से क्या फायदा?

इस जन्म का नहीं होगा तो पिछले जन्म का है। यह दुनिया ऐसी ही है। नई कोई चीज़ नहीं मिलेगी। जो दिया है वही मिलेगा। तुम्हें पसंद नहीं हो तो वह फिर मत दो। पसंद हो तो ही दो। वही धर्म समझने का है। ऐसा धर्म समझकर आगे कभी साक्षात्कार के संजोग मिलते हैं। मगर धर्म ही समझे नहीं तो फिर क्या करें? पाशवता ही हो जाए। पड़ोसी के साथ झगड़ा करता है, लड़ाई करता है, यह क्या मानवता है?

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में कभी-कभी करना पड़ता है।

दादाश्री : व्यवहार में जो करना पड़े, वो न्याय से होना चाहिए। व्यवहार में कोई हर्ज नहीं, पर न्याय से होना चाहिए। न्याय के बाहर नहीं होना चाहिए।

कुदरत का असल न्याय

प्रश्नकर्ता : किसी व्यक्ति में हार्ट की प्योरिटी रहती है, वह अच्छा है, प्रामाणिक है, फिर भी उसे संसार में प्रमोशन क्यों नहीं मिलता?

दादाश्री : नहीं, वह प्रमोशन तो नहीं मिले मगर उसको खाना भी नहीं मिले, क्योंकि वह प्रारब्ध के हाथ में है। खाना मिलना, प्रमोशन मिलना, वह सब प्रारब्ध के हाथ में है।

प्रश्नकर्ता : वह प्रारब्ध कौन लिखता है?

दादाश्री : कोई लिखने वाला नहीं है। वह ऐसे (स्वत:) ही लिखा जाता है, जैसे मशीन चलता है न? ऐसे ही चलता है।

प्रश्नकर्ता : अपने प्रारब्ध में ऐसे दु:ख भुगतने का क्यों आता है? इसमें भूल कहाँ होती है?

दादाश्री : दूसरे को दु:ख देने का भाव किया, उसका फल दु:ख ही आएगा और दूसरे को सुख देने का भाव किया तो उसका फल सुख ही आएगा।

प्रश्नकर्ता : मगर हम सुख देने का भाव करते हैं, फिर भी ऐसा तो नहीं होता।

दादाश्री : नहीं, यह पहले जो भाव हो गए थे, उसका फल इस भव में मिलता है और अभी नए भाव करते हैं, उसका आगे के भव में फल आएगा, इस भव में नहीं आएगा। पीछे जो भाव किए थे, उसका फल तैयार हो गया और फल परिपक्व होने के बाद में मिलता है।

प्रश्नकर्ता : पिछले भव के कर्म के फल से आज कोई व्यक्ति चोरी करता है, पर उसको आगे के जन्म में कुछ बिगड़े नहीं, ऐसा हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, चोरी करने के बाद यदि वह बहुत पश्चाताप करे कि, 'मैंने बहुत खराब किया, ऐसा नहीं करना चाहिए।' तो आगे के भव के लिए बहुत अच्छा होगा।

प्रश्नकर्ता : पश्चाताप तो मन का है न?

दादाश्री : हाँ, बस ऐसा पश्चाताप हो गया, तो बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे जेल में भी तो जाना पड़े न?

दादाश्री : जेल में गया, वह तो चोरी की, उसका फल मिला।

प्रश्नकर्ता : ऐसे फल मिलने से उसका समाज में जो मान है, इज़्ज़त है, वो तो चले जाएँगे न?

दादाश्री : हाँ, चोरी की तो समाज में मान रहता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : एक बेटा दारू पीकर आता है और घर में आने के बाद अपने माँ-बाप को मारता है, तो उसमें भूल किसकी है?

दादाश्री : माँ-बाप की। जो मार खाता है, उसकी ही भूल है। दूसरे माँ-बाप को क्यों मार नहीं पड़ती? इनको क्यों मारता है? वह माँ-बाप की भूल है।

प्रश्नकर्ता : तो माँ-बाप को मार नहीं खानी चाहिए न फिर?

दादाश्री : मार नहीं खाएगा तो क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : अगर कुछ कर सकता है तो मार नहीं खाना न!

दादाश्री : मार नहीं खाएगा, तो क्या करेगा? वह मार ही मारेगा। वह दारू पिएगा, सबकुछ करेगा और पीने के पानी के अंदर ज़हर भी डाल देगा और तुम सब को मार डालेगा।

प्रश्नकर्ता : तो इसमें बाप का क्या गुनाह है?

दादाश्री : माँ-बाप का बहुत ही गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : कैसे?

दादाश्री : वह पूर्व जन्म का हिसाब है। देखो, मैं तुम्हें समझाता हूँ। किसी ने आपकी जेब काट ली और पाँच हज़ार लेकर भाग गया और वह फिर आपके हाथ में नहीं आया। सब लोग क्या बोलेंगे कि 'जो भाग गया उसकी भूल है।' आप तो यहाँ रोते हैं। कौन रोता है? जिसकी भूल है, वो ही रोता है। चोर तो अभी मौज कर रहा है, वो जब पकड़ा जाएगा तब रोएगा, तब उसकी भूल है। आज तो जो रोता है, वही पकड़ा गया है। यह तो 'भुगतता है उसी की भूल'। ऐसे ये फादर-मदर आज पकड़े गए हैं।

आपकी होटेल में किसी व्यक्ति ने सौ रुपये का चाय-नाश्ता किया और रुपये आपको नहीं दिए, तो वह आपकी भूल है, उसकी भूल नहीं है। आप आज पकड़े गए। इसलिए उसको गाली मत दो। भगवान ऐसा बोलते हैं कि आपकी भूल से ही वो आपको मिला। वो तो आपके सौ रुपये का नुकसान करने के लिए निमित्त है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, इस संसार में हम रहते हैं तो ऐसा हर बार छोड़ देने से काम कैसे चलेगा?

दादाश्री : नहीं चलेगा तो फिर क्या करोगे तुम?

प्रश्नकर्ता : देखिए, हमारा होटल है। उसमें झगड़े करने वाले लोग भी आते हैं। अगर उन्हें रोकेंगे नहीं, तो वे हमेशा झगड़े करते ही रहेंगे।

दादाश्री : उनको तो रोकना ही चाहिए। रोकने में कोई हर्ज नहीं है। मगर जिसने मार खाई उसकी भूल है। आपको मारा तो आपकी भूल है। जो सहन (बर्दाश्त) करता है, उसकी भूल है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर सहनशीलता कितनी हद तक व्यक्ति को रखनी चाहिए?

दादाश्री : सहनशीलता रखने की ज़रूरत ही नहीं। सहनशीलता ज़्यादा रखेंगे तो स्प्रिंग की तरह उछलेगी और झगड़े हो जाएँगे। सहनशीलता कायदेसर (नियमानुसार) नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह कि कर्म तो करते ही जाना?

दादाश्री : कर्म तो करना ही है। कोई गुंडा आए तो बोलने का कि 'हम तुमको मार देगा।' हम खुद मार खाएँ ऐसा नहीं करने का। लेकिन उसके सामने हो गए, फिर जिसने मार खाया उसकी भूल है।

एक व्यक्ति स्कूटर पर जाता है और सामने से एक कार आकर उसको टकरा गई और उसका पाँव तोड़ दिया, तो वहाँ पर किसकी भूल है? जिसका पाँव टूट गया उसकी भूल है। कार वाला तो जब पकड़ा जाएगा तब उसकी भूल है। मगर स्कूटर वाले को, उसकी भूल हो गई थी, उसका फल मिल गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसकी भूल कैसे, दादाजी?

दादाश्री : पूर्व भव की भूल है, आज उसको फल मिल गया। वह सब को क्यों नहीं मिलता? यह हिसाब है। यह सब आपको मिला है, हम आपको मिले हैं, यह पूर्व भव का हिसाब है। आपको कुछ समाधान हुआ क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो गया।

दादाश्री : यह जो मच्छर है वह कभी काटते हैं, तो व्यक्ति क्या करता है? उसको मार देता है। और वह 'बबूल का शूल' ऐसे रास्ते में पड़ा है और आप बिना चप्पल चल रहे हैं, तो आपका पाँव ऐसे उसके ऊपर आ गया तो पाँव में लगा, तो उसके लिए कौन गुनहगार है? वहाँ पर तो मच्छर गुनहगार है, इसके लिए उसको मार दिया लेकिन इधर वह शूल पाँव के अंदर चला गया, वहाँ कौन गुनहगार है?

प्रश्नकर्ता : हम खुद ही गुनहगार हैं।

दादाश्री : हाँ, ऐसे ही है। आपकी ही भूल है। जो कोई आपको दु:ख देता है यह सब आपकी भूल से ही देता है और सुख देता है वह भी आपने जो सुख दिया है, तो सुख आता है। आपकी कुछ भूल है, इसलिए दु:ख है। हमें कोई दु:ख नहीं है क्योंकि हमारी कोई भूल नहीं है।

अपनी भूल से छूटना कैसे?

दूसरे को कोई तकलीफ नहीं हो ऐसा होना चाहिए और अपनी भूल से किसी को परेशानी हो गई तो क्या करने का, कि उसके अंदर शुद्धात्मा भगवान है, उनके पास माफी माँगने का कि, 'हे शुद्धात्मा भगवान, आज मेरे से उस व्यक्ति को बहुत परेशानी हो गई, बहुत नुकसान हो गया। हे भगवान, उसकी मैं माफी माँगता हूँ, मेरी इच्छा नहीं थी, फिर भी ऐसा हो गया है, मुझे माफ करो। फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा। ऐसा नहीं होना चाहिए।' ऐसा आप भगवान से बोलो। क्योंकि दुनिया में सभी जीव मात्र के अंदर भगवान बैठे हैं। सभी

देहधारी के अंदर शुद्ध चेतन रूप बैठे हैं। भगवान ये नोंध (नोट) करते हैं कि 'रवीन्द्र ने ये बुरा किया, इसको नुकसान किया' और फिर इसका आपको फल मिलता है। रोज़ सुबह में ऐसा बोलने का कि 'मुझसे किसी भी जीव को किंचित्मात्र दु:ख न हो'। ऐसी भावना करके बाहर निकलने का। इतना करेगा? तो कल से ही चालू कर देना। फिर किसी को दु:ख हो गया तो, 'हे शुद्धात्मा भगवान, ये इतनी मेरी गलती हो गई, मुझे माफ कर दो, फिर गलती नहीं करेंगे।' इतना ही बोलने का, दूसरा कुछ नहीं बोलने का। बाहर मूर्ति के पास जाना–नहीं जाना, वो तो आपकी मर्ज़ी की बात है, मगर सच्चे भगवान तो अंदर ही है।

प्रश्नकर्ता : समझ लो मेरे से गलती नहीं हुई है, तो?

दादाश्री : सारा दिन गलती ही होती है। आपकी कितनी गलती होती है, मालूम है? रोज़ की पाँच हज़ार गलतियाँ होती हैं लेकिन आपको गलती का पता ही नहीं है। क्योंकि गलती की तलाश कैसे करते हो? गलती तो, इतनी बड़ी-बड़ी गलतियाँ हैं, बहुत गलतियाँ हैं। किसी के साथ गुस्सा हो गया, किसी की कोई चीज़ लेने का भाव हो गया, व्यापार में कपट करके ज़्यादा ले लेने का विचार हो गया, ऐसा विचार भी हो तो भी गलती है और उसकी भगवान के पास माफी माँग लेने की।

ऐसी गलती होती है या नहीं होती है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसी गलती तो करता हूँ।

दादाश्री : आप तो कोई-कोई बड़ी गलती देख सकते हैं, मगर आज से आप ज़्यादा देखेंगे। जब हम आत्म साक्षात्कार करा देंगे फिर बहुत दिखेगा, सूक्ष्म भी दिखेगा। और जितनी गलतियाँ देखोगे, उतनी गलतियों की माफी माँग लो, तो वो गलतियाँ चली जाएँगी, खत्म हो जाएँगी। बस, वही धर्म है, चौबीस तीर्थंकरों का। बाकी, शास्त्र तो एक व्यक्ति के लिए नहीं लिखे हैं, सब के लिए लिखे हैं। उसमें जो

लिखा है, वे सब चीज़ें आपके लिए नहीं हैं। आपको जिसकी ज़रूरत है, उतनी ही बात आपके लिए है। आपको क्या ज़रूरत है, आपकी प्रकृति को क्या अनुकूल है, वही बात ले लेने की है। दूसरी सब बात अपने को क्या करनी है? भगवान ने शास्त्र तो सब के लिए लिखे हैं। अपनी प्रकृति को अनशन अनुकूल आए तो अनशन करना, अनुकूल न आए तो मत करना।

'निजदोष क्षय' का साधन

प्रश्नकर्ता : स्वरूप का ज्ञान न मिले, तब तक क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तब तक भगवान की बात है, उसकी आराधना करनी है। वीतराग भगवान की दो बातें करने की हैं। एक तो आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करने चाहिए। भूल से अपने हाथ से दूसरे को लग जाए, तो हमे तुरंत ही आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करना चाहिए। जितना आक्रमण या अतिक्रमण हुआ, उन सब की आलोचना, अपने गुरु हों, उन्हें लक्ष्य में रखकर, अपनी भूल को कबूल करनी चाहिए। फिर प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान करना चाहिए। प्रतिक्रमण कैश, ऑन द मोमेन्ट करना चाहिए। और दूसरी बात ये दूषमकाल है, आर्तध्यान और रौद्रध्यान के विचार होते हैं। उसमें विचार नहीं करना होता है तो भी हो जाता है, तो उसका भी आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करना चाहिए। श्रीमद् राजचंद्र ने लिखा है, 'मैं तो दोष अनंत का पात्र हूँ करुणाल।' और दूसरा क्या कहते हैं कि 'दिखे नहीं स्व-दोष तो तरें कौन उपाय?' अपने दोष अपने को नहीं दिखे तो पार उतरने का मार्ग ही नहीं है। ये लोग दो सौ-दो सौ, पाँच सौ-पाँच सौ प्रतिक्रमण हर रोज़ करते हैं, तो आपके दोष आपको क्यों नहीं दिखते? मैं आपको बता दूँ? दोष होते हैं, फिर भी आपको नहीं दिखते तो उसका क्या कारण है?

प्रश्नकर्ता : आप बताइए।

दादाश्री : आपने दोष किए हैं, इसलिए आप 'आरोपी' हैं और

आप जज भी हैं और आप वकील भी हैं। खुद ही वकील, खुद ही जज और खुद ही आरोपी। बोलिए, कितना गुनाह मालूम पड़ेगा? खुद जज है, इसलिए कहता है कि, 'तू आरोपी हो या नहीं?' तो वकील क्या प्लीडिंग करता है कि, 'सब लोग ऐसा करते हैं, उसमें मेरा क्या गुनाह है?' प्लीडर है या नहीं तुम्हारे पास? और इन 'महात्माओं' को प्लीडिंग नहीं होती, क्योंकि ये दोष होते ही 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण करते हैं। 'शूट ऑन साइट' इधर होता है न? जब हुल्लड़ होता है, तब डी.एस.पी. वहाँ 'शूट ऑन साइट' करने को कहता है। लेकिन अपने अंदर जब हुल्लड़ होता है, तब 'शूट ऑन साइट' होना चाहिए। जो दोष होता है, उसका प्रतिक्रमण करो। जितने प्रतिक्रमण किए उतने शुद्ध हो गए और प्रतिक्रमण नहीं किया तो फिर क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : मल्टीप्लिकेशन होता है।

दादाश्री : 'ज्ञानी पुरुष' के अंदर तो दोष ही नहीं रहते, इसलिए उन्हें निर्ग्रंथ बोला जाता है। स्वरूप का ज्ञान होने के बाद वकील नहीं रहता। आप खुद जज हैं, आप ही आरोपी हैं और वकील भी आप हैं, तो कितना गुनाह आपको दिखेगा? तुम्हारी कितनी गलती दिखेगी?

प्रश्नकर्ता : अपनी गलती नहीं दिखेगी।

दादाश्री : क्यों नहीं दिखती?

प्रश्नकर्ता : क्योंकि अज्ञान है।

दादाश्री : हाँ, मगर आप वकील रखते हैं, वह वकालत करता है कि, सब लोग तो ऐसा करते हैं, इसमें मेरी क्या गलती है? ऐसा बोलता है कि 'अपना कोई गुनाह नहीं है'।

प्रश्नकर्ता : ये वकील अपनी गलती को छुपाते हैं।

दादाश्री : हाँ, वकील सब गलतियों को छुपाते हैं। इन सभी

'महात्माओं' को हर रोज़ सौ-दो सौ गलतियाँ दिखती हैं और उतने प्रतिक्रमण भी करते हैं। आपने कितने प्रतिक्रमण किए?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी पश्चाताप हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, ठीक है मगर पश्चाताप तो फॉरेन वाले के लिए है। अपने लोगों को तो प्रतिक्रमण करने हैं। ये साधु लोग जो प्रतिक्रमण करते हैं वह तो पुस्तक में अर्धमागधी भाषा में लिखा है, वही प्रतिक्रमण बोलते हैं। प्रतिक्रमण का यथार्थ अर्थ क्या है कि तुमने किसी के साथ अतिक्रमण किया तो फिर तुम्हारे को प्रतिक्रमण करना ही चाहिए। अतिक्रमण नहीं किया, तो प्रतिक्रमण करने की कोई ज़रूरत नहीं है। सहज भाव से, क्रमण से दुनिया चल रही है मगर अतिक्रमण यानी किसी को दुःख हो जाए ऐसा तुम कुछ करोगे, तो फिर तुम्हारे को प्रतिक्रमण करना पड़ेगा।

जय सच्चिदानंद

नमस्कार विधि

- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (४०)
- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते ॐ परमेष्टी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विचरते पंच परमेष्टी भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में विहरमान तीर्थंकर साहिबों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- वीतराग शासन देवी-देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- निष्पक्षपाती शासन देवी-देवताओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- चौबीस तीर्थंकर भगवंतों को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- श्री कृष्ण भगवान को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- भरत क्षेत्र में हाल विचरते सर्वज्ञ श्री दादा भगवान को निश्चय से अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- दादा भगवान के सर्व समकितधारी महात्माओं को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- सारे ब्रह्मांड के समस्त जीवों के रियल स्वरूप को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। (५)
- रीयल स्वरूप ही भगवत् स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को भगवत् स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (५)
- रीयल स्वरूप ही शुद्धात्म स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को शुद्धात्म स्वरूप से दर्शन करता हूँ। (५)
- रीयल स्वरूप ही तत्त्व स्वरूप है, इसलिए सारे विश्व को तत्त्वज्ञान रूप से दर्शन करता हूँ। (५)

(वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी को परम पूज्य श्री दादा भगवान के माध्यम द्वारा प्रत्यक्ष नमस्कार पहुँचते है। कोष्ठक में लिखी संख्यानुसार उतनी बार प्रतिदिन बोलें)

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

1. आत्मसाक्षात्कार
2. ज्ञानी पुरुष की पहचान
3. सर्व दु:खों से मुक्ति
4. कर्म का सिद्धांत
5. आत्मबोध
6. मैं कौन हूँ ?
7. पाप-पुण्य
8. भुगते उसी की भूल
9. एडजस्ट एवरीव्हेयर
10. टकराव टालिए
11. हुआ सो न्याय
12. चिंता
13. क्रोध
14. प्रतिक्रमण (सं, ग्रं)
16. दादा भगवान कौन ?
17. पैसों का व्यवहार (सं, ग्रं)
19. अंत:करण का स्वरूप
20. जगत कर्ता कौन ?
21. त्रिमंत्र
22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
23. चमत्कार
24. प्रेम
25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (सं, पू, उ)
28. दान
29. मानव धर्म
30. सेवा-परोपकार
31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार (सं)
34. क्लेश रहित जीवन
35. गुरु-शिष्य
36. अहिंसा
37. सत्य-असत्य के रहस्य
38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार (सं)
40. वाणी, व्यवहार में... (सं)
41. कर्म का विज्ञान
42. सहजता
43. आप्तवाणी - 1
44. आप्तवाणी - 2
45. आप्तवाणी - 3
46. आप्तवाणी - 4
47. आप्तवाणी - 5
48. आप्तवाणी - 6
49. आप्तवाणी - 7
50. आप्तवाणी - 8
51. आप्तवाणी - 9
52. आप्तवाणी - 12 (पू)
53. आप्तवाणी - 13 (पू, उ)
55. आप्तवाणी - 14 (भाग-1 से 3)
58. ज्ञानी पुरुष (भाग-1)

(सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध)

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट **www.dadabhagwan.org** पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।

संपर्क सूत्र

दादा भगवान परिवार

अडालज : **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421
फोन : 9328661166, 9328661177
E-mail : info@dadabhagwan.org

मुंबई : **त्रिमंदिर,** ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)
फोन : 9323528901

दिल्ली	9810098564	**बेंगलूर**	9590979099
कोलकता	9830080820	**हैदराबाद**	9885058771
चेन्नई	7200740000	**पूणे**	7218473468
जयपुर	8890357990	**जलंधर**	9814063043
भोपाल	6354602399	**चंडीगढ़**	9780732237
इन्दौर	6354602400	**कानपुर**	9452525981
रायपुर	9329644433	**सांगली**	9423870798
पटना	7352723132	**भुवनेश्वर**	8763073111
अमरावती	9422915064	**वाराणसी**	9795228541

U.S.A. : **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330-111-DADA (3232)

Kenya : +254 722 722 063

UAE : +971 557316937

Dubai : +971 501364530

Australia : +61 421127947

New Zealand : +64 21 0376434

Singapore : +65 81129229

www.dadabhagwan.org



दु:ख तो ओन्ली रोंग बिलीफ ही है। जिसको रोंग बिलीफ है, वहाँ दु:ख है। जिसको रोंग बिलीफ नहीं, वहाँ दु:ख ही नहीं है।

– दादाश्री

dadabhagwan.org

ISBN 978-93-86289-69-8
9 789386 289698
Printed in India
Price ₹40